Welcome Slide

Indore Society For Organ Donation

Indore Society For Organ Donation

www.organdonationindore.org

Wall of Fame of Organ Donors

Donate Organs-Save Lives

Late Mr. Rameshwar Khede

Date: 07.10.15
Donated Organ: Kidney,Liver, Skin and Cornea
Gram Balwadi, Bhagwanpura, District -Khargoun

Late Mr. Ramesh Asrani

Date: 08.11.15
Donated Organ: Kidney,Liver, Skin and Cornea
4-Palsikar Colony, District - Indore

Late Ku. Sonia Chouhan

Date: 02.01.16
Donated Organ: Heart, Liver, Skin and Cornea
Malviya Nagar, District - Indore

Late Mr. Darshan Gurjar

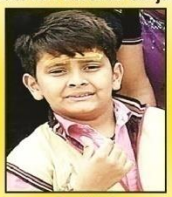

Date: 22.01.16
Donated Organ: Kidney,Liver, Skin and Cornea
29-B Nageen Nagar, District - Indore

Late Mr. Vishwas Dosi

Date: 08.02.16
Donated Organ: Kidney,Liver, Skin and Cornea
3-Javahar Marg Mahidpur, District - Ujjain

Late Mr. Durgesh Malviya

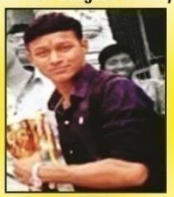

Date: 05.03.16
Donated Organ: Kidney, Liver, Heart, Skin and Cornea
Gram -Khetiya, District - Barwani

Late Mr. Pappu Dawar

Date:06.03.16
Donated Organ: Heart, Kidney,Liver, Skin and Cornea
Gram-Jajamkhedy, Tehsil- Manawar, District-Dhar

Late Mr. Gourav Jain

Date:09.03.16
Donated Organ: Heart, Kidney,Liver, Skin and Cornea
35-Mangal Nagar Sukhaliya District - Indore

Late Mr. Deepak Dhaketa

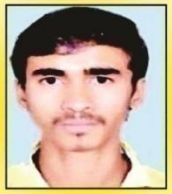

Date:28.04.16
Donated Organ: Heart, Kidney,Liver, Skin and Cornea
492/2 Gauri Nagar District -Indore

Late Mr. Gopal Teli

Date: 03.10.16
Donated Organ: Heart, Kidney,Liver, Skin and Cornea
13-Nivlapur, District-Unnao, Uttar Pradesh

Late Mr. Sunil Peruliya

Date: 07.11.16
Donated Organ: Heart, Kidney, Liver, Skin and Cornea
374-Badi Gwaltoli, District-Indore

Late Mr. Ashok Jain

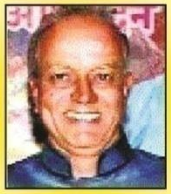

Date:15.11.16
Donated Organ: Kidney, Liver, Skin and Cornea
C-47/8 Rishi Nagar Extension, District-Ujjain

National Organ & Tissue Transplant Organisation
Directorate General of Health Services, MOHFW, GOI
4th floor, NIOP Building, Safdarjung Hospital Campus, New Delhi

"7th Indian Organ Donation Day 2016"

Certificate of Appreciation

In appreciation of services by *Indore, Madhya Pradesh* Best Emerging district of the State in the field of Cadaveric Organ Donation Program for the year 2015-2016. Their commitment for the Noble act of Organ Donation, has resulted in providing Hope & Health to needy patients.

(DR. VIMAL BHANDARI) Director NOTTO MOHFW,GOI

(DR. JAGDISH PRASAD) Director General of Health Services MOHFW,GOI

Date: 30 November,2016

Help line 24x7: 1800-11-4770 website: www.notto.gov.in

Late Mr. Sunil Devkar

Date: .17.11.16
Donated Organ: Kidney, Liver,Skin and Cornea
Gram-Shanwara, District-Burhanpur

Late Mr. Shubham Atadiya

Date: 07.11.16
Donated Organ: Kidney, Skin and Cornea
Gram-Chatarpura, Bagli, District-Dewas

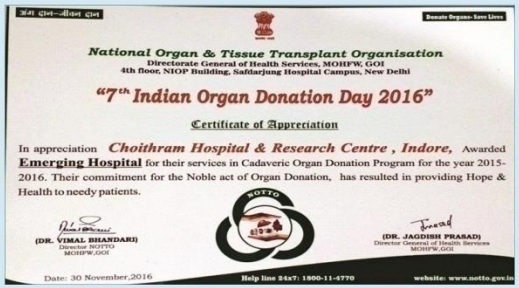

National Organ & Tissue Transplant Organisation
Directorate General of Health Services, MOHFW, GOI
4th floor, NIOP Building, Safdarjung Hospital Campus, New Delhi

"7th Indian Organ Donation Day 2016"

Certificate of Appreciation

In appreciation *Choithram Hospital & Research Centre , Indore,* Awarded **Emerging Hospital** for their services in Cadaveric Organ Donation Program for the year 2015-2016. Their commitment for the Noble act of Organ Donation, has resulted in providing Hope & Health to needy patients.

(DR. VIMAL BHANDARI) Director NOTTO MOHFW,GOI

(DR. JAGDISH PRASAD) Director General of Health Services MOHFW,GOI

Date: 30 November,2016

Help line 24x7: 1800-11-4770 website: www.notto.gov.in

"BE A PART OF THE MOVEMENT TO PROMOTE ORGAN DONATION"

अन्नदाता रामेश्वर बनें, अंगदाता

- कर्मठ और जुझारू चालीस वर्षीय रामेश्वर खेड़े के परिवार में पत्नी और दो बच्चें हैं।
- सामाजिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहने वाले श्री रामेश्वर अपने 19 वर्षीय भतीजे के लिए कार्निया तलाशते रहते थे, परन्तु किसी को भी अनुमान नहीं था कि उनके अंगों से कई लोगों के जीवन में आशा का सूर्योदय हो जाएगा ।
- उनका असमय देहावसान हुआ और ग्रामीण परिवेश के होने के बावजूद उनके परिवार और परिजनों ने मरणोपरांत उनके अंगों के दान का सराहनीय निर्णय लेकर एक मिसाल कायम कर डाली।
- आज अन्नदाता किसान स्व. श्री रामेशवर की किडनियां, दिल, लीवर, कार्निया और त्वचा अनेक लोगों के निराश जीवन में मृत्युंजयी बन चुके हैं।

मृत्यु के बाद भी जिंदगी देने का कलेजा दिखा गए रामेश्वर

प्रदेश में पहली बार: बना ग्रीन कॉरिडोर, थम गया ट्रैफिक, एंबुलेंस ने 20 मिनट का सफर 8 मिनट में तय किया

जिंदगी को रास्ता देने के लिए धन्यवाद इंदौर

खरगोन के ब्रेन डेड व्यक्ति का लिवर गुड़गांव में ट्रांसप्लांट

किडनी, आंखें भी दान

इंदौर/गुड़गांव(नप्र)। सड़क हादसे में जान गंवाने वाले रामेश्वर के परिजन ने जैसे ही फैसला किया कि उसके अंग जरूरतमंदों को दे दिए जाएं, इंदौर मदद के लिए उठ खड़ा हुआ। लिवर 855 किमी दूर गुड़गांव के मेदांता अस्पताल जाना था। डॉक्टरों ने कम से कम समय में लिवर शरीर से अलग किया, प्रशासन ने शहर के बड़े मार्ग को ग्रीन कॉरिडोर बनाया और पुलिस जवानों ने चोइथराम से एयरपोर्ट तक का 20 मिनट का सफर 8 मिनट में तय करवा दिया। इंदौर की रफ्तार ने ठहरकर जिंदगी को रास्ता दिया। लिवर मेदांता में 55 साल की महिला को ट्रांसप्लांट किया गया। किडनियां और आंखें इंदौर में। आंखें और स्किन अभी प्रिजर्व कर ली गई हैं। किडनियां खंडवा की शारदा और भोपाल के संजीव जॉन को ट्रांसप्लांट की गईं।

रामेश्वर

सबका अमूल्य योगदान

मेट्रो में ग्रीन कॉरिडोर बनाकर अंग ले जाना आसान है, लेकिन हम शॉर्ट नोटिस पर इस मुश्किल ऑपरेशन को अंजाम दे सके। इसके लिए इंदौर की जनता को धन्यवाद। ट्रैफिक पुलिस और डॉक्टरों ने अमूल्य योगदान दिया। **-संजय दुबे, कमिश्नर**

एंबुलेंस (लाल घेरे में) गुजरने के दौरान पलसीकर चौराहे पर ट्रैफिक रोकता जवान। ऐसा चार चौराहों पर किया गया। **फोटो: चेतन सोनी**

इंदौर ने ये किया

- गुड़गाव के मेदांता अस्पताल से आई चार डॉक्टरों की टीम ने चोइथराम अस्पताल में सवा 11 बजे रामेश्वर का लिवर हार्वेस्टिंग (शरीर से अलग) किया। फिर टीम 12.02 बजे एयरपोर्ट के लिए रवाना हुई।
- संभागायुक्त ने लिवर ले जाने के लिए चोइथराम अस्पताल से महू नाका, राजमोहल्ला, बड़ा गणपति होते हुए एयरपोर्ट तक के रास्ते को 'ग्रीन कॉरिडोर' घोषित कर दिया।
- अस्पताल से 10.4 किमी दूर एयरपोर्ट तक लिवर पहुंचाने में टीम को महज 8 मिनट लगे। एम्बुलेंस जहां-जहां से गुजरी लोगों ने उसे रास्ता दिया।
- साढ़े 12 बजे जेट एयरवेज की फ्लाइट से रामेश्वर का लिवर दिल्ली रवाना किया गया।

चोइथराम से लिवर लेकर जाते मेदांता के डॉक्टर्स।

गुड़गांव ने दिया साथ

- डॉक्टरों की फ्लाइट दो बजकर 10 मिनट पर दिल्ली के इंदिरा गांधी एयरपोर्ट पर लैंड हुई।
- ट्रैफिक जाम का प्रतीक दिल्ली-गुड़गांव एक्सप्रेस-वे पर एयरपोर्ट से ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया। 18 किमी की दूरी 15 मिनट में तय कर दोपहर करीब ढाई बजे मेदांता अस्पताल में लिवर पहुंचाया गया।
- पहले से तैयार मेदांता मेडिसिटी के सीएमडी डॉ. नरेश त्रेहान की टीम ने मरीज को लिवर प्रत्यारोपित किया।

» जिंदगी को ग्रीन सिग्नल- पेज 02
» देहदान में इंदौर अव्वल- पेज 03
» हर साल एक लाख ब्रेनडेड- पेज 13

मेदांता में पहुंचा लिवर। **फोटो: संजय गुलाटी**

पहली बार हुई ये तीन बातें

- ट्रांसप्लांट के लिए ग्रीन कॉरिडोर घोषित किया गया।
- किसी अंग को दूसरे राज्य ले जाकर ट्रांसप्लांट किया।
- लिवर ट्रांसप्लांट प्रक्रिया हुई।

परिजन बोले-अंग किसी के काम आएं तो दे दो

खेतों और कंस्ट्रक्शन साइट पर मजदूरी करने वाले खरगोन के भगवानपुरा तहसील (बलवाड़ी) के रहने वाले 40 वर्षीय रामेश्वर खेडे सोमवार को दुर्घटना में घायल हो गए थे। बड़े भाई भगवान और छोटे भाई जयंत खेड़े ने बताया कि मंगलवार रात करीब 12.30 बजे डॉक्टरों ने बताया कि रामेश्वर की ब्रेन डेथ हो गई है। हालांकि अंग काम कर रहे हैं। समझाने के बाद परिजन ने कहा कि रामेश्वर के अंग किसी के काम आ सकते हों तो उसे दे दो। सवा 11 बजे रामेश्वर के शरीर से लिवर अलग कर दिया गया।

भतीजे को चाहिए थी आंखें

पत्नी किरण ने बताया कि रामेश्वर का 19 साल का भतीजा रोहित दृष्टिबाधित है। उसके लिए रामेश्वर हमेशा आंखें तलाशते रहते थे। हमने रोहित को ही आंखें लगाने की गुहार लगाई, लेकिन डॉक्टरों ने बताया कि रामेश्वर की आंखें उसे लगाना संभव नहीं है, क्योंकि उसके लिए आंखों की जांच करनी होगी। भविष्य में जरूर दान में मिलने पर आंख रोहित को लगाने का भरोसा दिया। चार बच्चों की मां किरण ने कहा- मैंने भले ही पति को खो दिया, लेकिन संतोष इस बात का है कि उनके अंगों से किसी को नया जीवन मिलेगा।

ब्रेनडेड मरीज के लिवर-किडनी से **तीन लोगों को मिली नई जिंदगी**, पूरे शहर ने रुककर सांसों को दिया रास्ता

इंदौर में पहली बार ग्रीन कॉरिडोर बनाकर लिवर को ढाई घंटे में गुड़गांव पहुंचाया, सफल ट्रांसप्लांट

नीता सिसौदिया | इंदौर/गुड़गांव

छोटे से गांव का ब्रेनडेड मरीज तीन लोगों को नई जिंदगी दे गया। बुधवार को उसका लिवर व किडनियां ट्रांसप्लांट कर दी गईं। लिवर को इंदौर से ढाई घंटे में गुड़गांव के मेदांता अस्पताल पहुंचा दिया गया। इसके लिए इंदौर में चोइथराम अस्पताल से एअरपोर्ट तक और दिल्ली में एअरपोर्ट से गुड़गांव के अस्पताल तक ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया। ग्रीन कॉरिडोर बनाए जाने का इंदौर व प्रदेश में पहला मामला था। मरीज की किडनी इंदौर में ही दो मरीजों को लगा दी गईं।

खरगोन के पास टांडा बरूड़ के बलवाड़ी गांव के रहने वाले 40 वर्षीय रामेश्वर खेड़े को सड़क हादसे में सिर में गंभीर चोट आई थी। उन्हें सोमवार रात चोइथराम अस्पताल रैफर किया गया था। यहां डॉक्टरों ने बुधवार सुबह 10.22 बजे उन्हें ब्रेनडेड घोषित कर दिया। परिजनों ने वहां लगे इंदौर ऑर्गन डोनेशन सोसायटी के पोस्टर पर मुस्कान ग्रुप के कार्यकर्ताओं के नंबर देखे। कॉल किया। काउंसलर तुरंत अस्पताल पहुंचे और परिजनों को अंगदान के लिए राजी किया। कमिश्नर संजय दुबे की पहल पर सरकारी अमला सक्रिय हुआ। ऑपरेशन थियेटर में पीएम किया गया। 12 बजे लिवर को लेकर निकली एंबुलेंस 12.08 पर एअरपोर्ट पहुंची और 2.30 बजे तक लिवर गुड़गांव के अस्पताल पहुंचा दिया गया। इधर, किडनी प्रत्यारोपण के लिए खंडवा की शारदा जिंदानी और भोपाल के संजीव जॉन को बुलाया गया। दोपहर में दोनों को रामेश्वर की किडनी लगा दी गईं। शेष | पेज 6 पर

रामेश्वर... अब भी तीन लोगों में जिंदा

यहां पहले बन चुके ग्रीन कॉरिडोर > इससे पहले चेन्नई, बेंगलुरु, मदुरै, दिल्ली और जयपुर में ब्रेन डेड मरीजों के अंगों को अन्य स्थान पर भेजे जाने के लिए "ग्रीन कॉरिडोर" बनाए गए हैं।

सबने एक-एक मिनट बचाया... और बच गई तीन जिंदगियां -पेज 2

लिवर लेकर 8 मिनट में चोइथराम अस्पताल से एअरपोर्ट पहुंचे, विमान उड़ान के लिए तैयार था

ग्रीन कॉरिडोर (अन्य वाहनों को रोककर एंबुलेंस के लिए बनाया रास्ता) बनाकर एअरपोर्ट पहुंचाए गए लिवर को विमान में ले जाती डॉक्टरों की टीम। फोटो: विनय वर्मा

रामेश्वर के परिवार को धन्यवाद, जिनके द्वारा लिवर देने से एक जान बच गई। सहयोग और समन्वय से ग्रीन कॉरिडोर का यह प्रयास सार्थक रहा। एक व्यक्ति के अलग-अलग अंगों से छह लोगों की जान बचाई जा सकती है। - डॉ. नरेश त्रेहन, चेयरमैन व एमडी मेदांता अस्पताल

हमने पहले से तैयारी की थी। किडनी के साथ लिवर प्रत्यारोपण भी सफल रहा। पुलिस, एयरपोर्ट अथॉरिटी, जेट एयरवेज, सीआईएसएफ और प्रशासन का सहयोग रहा है। इसलिए यह कर पाए। शहर के लिए यह गर्व की बात है। - संजय दुबे, कमिश्नर

शहर में कैडेवर ऑर्गन डोनेशन पहले भी हुआ है, लेकिन पहली बार लिवर निकाला गया। दो किडनी वेटिंग के हिसाब से मरीज को लगाई गई है। - डॉ. अमित भट्ट, प्रशासनिक अधिकारी चोइथराम अस्पताल

इन्होंने की पहल

- रामेश्वर के परिजन, जिन्होंने मुस्कान ग्रुप से संपर्क साधा।
- मुस्कान के जीतू बगानी, जिन्होंने काउंसलिंग की।

इनके रहे प्रयास

- चोइथराम अस्पताल के डॉ. प्रदीप सालगिया और डॉ. अजय जैन ने कमिश्नर संजय दुबे को बताया।

इन्होंने की व्यवस्था

कमिश्नर ने पूरी व्यवस्था संभाली। प्रशासन, पुलिस व ट्रैफिक से लेकर एअरपोर्ट अथॉरिटी।

और इन्होंने किया सार्थक

मेदांता अस्पताल ने लिवर को तुरंत स्वीकार किया और ट्रांसप्लांट किया।

दर्शन अब अदृश्य रूप में दर्शनीय है

- पांचवीं कक्षा के बेहद होनहार छात्र और कराटे में कई मैडल जीतने वाले 12 वर्षीय मास्टर दर्शन गुर्जर की विज्ञान विषय में बेहद रुचि थी ।
- दर्शन अपने परिजनों का बेहद लाड़ला था ।
- साइकल चलाने का बेहद शौक़ीन दर्शन ऊँची शिक्षा ग्रहण कर साइंटिस्ट बनना चाहता था, परन्तु एक दुर्घटना ने उसके और परिजनों के सपनों को चूर चूर कर दिया । दर्शन की असमय मृत्यु उसके अपने जन्मदिन पर ही हो गई ।
- आकस्मिक दुखों के पहाड़ को सहते हुए भी मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पित दर्शन के ताऊ श्री रामविलासजी गुर्जर ने ऐसी विपरीत परिस्थितियों में भी दर्शन के अंगदान का साहसिक निर्णय लिया । यही वजह है कि आज दर्शन कई लोगों के शरीरों में अदृश्य रूप से जीवित है ।
- हम तहे दिल से गुर्जर परिवार का अभिनन्दन करते हैं ।

सिखा गया मासूम ,जिंदगी का दर्शन "अंगदान "

19 दिन में दूसरी बार डबल ग्रीन कॉरिडोर

12 साल का दर्शन दे गया 4 को नई जिंदगी

16 को जन्मदिन पर ही हुई थी दुर्घटना, मां की मौके पर मौत, शुक्रवार को दर्शन हुआ ब्रेनडेड

भास्कर संवाददाता | इंदौर

12 साल का दर्शन गुर्जर। को उसका जन्मदिन था, लेकिन उसी दिन एक सड़क हादसे में घायल हो गया। मां चंदा की तो मौके पर ही मौत हो गई थी, जबकि दर्शन को छह दिन बाद शुक्रवार को डॉक्टरों ने ब्रेनडेड घोषित कर दिया। जाते-जाते भी वह चार लोगों को नई जिंदगी दे गया। उसका लिवर दिल्ली के सरकारी अस्पताल इंस्टिट्यूट ऑफ लिवर एंड बिलियरी साइंस को भेजा गया, जबकि किडनियां इंदौर के दो निजी अस्पतालों को दी गईं।

अब यादें ही रह गई... एक पुरानी तस्वीर में मां के साथ दर्शन।

इसके लिए शहर में दो बार ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया।

रात करीब 9.32 बजे पहला ग्रीन कॉरिडोर बना और चोइथराम अस्पताल से नौ मिनट में लिवर एयरपोर्ट पहुंचा दिया गया। रात 10.10 बजे की फ्लाइट से उसे दिल्ली भेजा गया। वहीं रात करीब 11 बजे दूसरा ग्रीन कॉरिडोर चोइथराम अस्पताल से ग्रेटर कैलाश अस्पताल (7 मिनट) तक बनाया गया, जहां भिलवाड़िया के 48 साल के मरीज को किडनी दी गई। दूसरी किडनी चोइथराम अस्पताल को ही दी गई। दर्शन की आंखें और स्किन भी दान की गई हैं। चार महीने में यह चौथा मौका है, जब शहर में ऑर्गन ट्रांसप्लांट के लिए ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया। इससे पहले पिछले साल अक्टूबर, नवंबर में और इस साल 3 जनवरी को कॉरिडोर बना था।

दिल भी दान करना चाहते थे पर कोई मिला नहीं-पेज 6

12 साल का दर्शन दे गया तीन लोगों को जिंदगी

■ एक किडनी चोइथराम तो दूसरी ग्रेटर कैलाश अस्पताल में भर्ती मरीजों को प्रत्यारोपित की गई

दबंग रिपोर्टर • इंदौर

इंदौर-दिल्ली के डॉक्टरों ने फिर कायम की मिसाल

9 मिनट 54 सेकंड में एयरपोर्ट पहुंचा लीवर

दिल्ली के आईएलबीएस इंस्टिट्यूट में पहुंचा लीवर

किडनी मैच में हुआ विलंब

नहीं हो सका हार्ट का उपयोग

ट्रैफिक पुलिस की ठोस तैयारी

खुशियां मातम में बदली

शहर में पहली बार

आस खो चुके तीन व्यक्तियों के जीवन को नया आत्मविश्वास दे गए विश्वास

मर कर भी अमर हो गया विश्वास

- 41 वर्षीय विश्वास डोसी, एक मिलनसार, आदर्शवादी, कर्मठ, हंसमुख व जिन्दादिल इन्सान थे।

- महिदपुर जैसे छोटे से शहर में विश्वास के पिता श्री जवाहर डोसी, एक जागरूक पत्रकार के रूप में अनेक वर्षों से जनचेतना की ध्वजा को थामे हुए हैं।

- इसी के चलते उन्होंने कुछ सालों पहले महिदपुर जैसे छोटे से शहर में रहते हुए अपने पिता के कार्निया के दान का अभूतपूर्व निर्णय लिया था।

- श्री जवाहर डोसी ने अपने युवा पुत्र की असमय मृत्यु पर भी आपा नहीं खोया और एक ऐसा अभूतपूर्व और साहसिक निर्णय लिया, जिसने पूरे देश में एक अलख जगा दी । उन्होंने अपने लाड़ले बेटे की किडनी, लीवर और कार्निया का अनोखा दान कर एक अनूठा इतिहास रच डाला । उनके मानवीय संवेदनाओं से लबरेज निर्णय पर विश्वास की अर्द्धांगिनी ने भी सहमति की मोहर लगा कर अतुलनीय साहस का परिचय दिया।

- स्वर्गीय श्री विश्वास की पुत्र समान पुत्री श्रेष्ठी ने 15 वर्ष की अल्पायु में अपने दिवंगत पिता को मुखाग्नि देने का कारुणिक दायित्व निभाया।
- हम डोसी परिवार का इस अनुकरणीय कार्य हेतु अभिनन्दन करते हैं।

वेलडन विश्वास | लिवर भेजा गया गुड़गांव तो किडनी इंदौर में ही दो मरीजों को लगाई

खाक होने से पहले तीन लोगों को जिंदगी दे गया विश्वास

इंदौर। एक बार फिर शहर में ग्रीन कॉरिडोर बनाकर मौत से जूझ रहे मरीजों को जिंदगी दी गई। उज्जैन के महिदपुर निवासी 41 वर्षीय विश्वास डोसी के ब्रेन डेड घोषित होने के बाद मंगलवार सुबह लिवर और किडनी दान दिए गए।

लिवर गुड़गांव स्थित मेदांता अस्पताल भेजा गया, जिसे दिल्ली के 55 वर्षीय व्यक्ति को लगाया गया। वहीं एक किडनी चोइथराम अस्पताल 35 वर्षीय युवक को जबकि दूसरी ग्रेटर कैलाश अस्पताल में 55 वर्षीय मरीज को लगाई गई। दोनों ही मरीज 10 साल से डायलिसिस पर थे। लिवर और किडनी पहुंचाने के लिए दो जगह ग्रीन कॉरिडोर बनाए गए।

विश्वास

मंगलवार सुबह 7 बजे से चोइथराम अस्पताल से एयरपोर्ट और ग्रेटर कैलाश अस्पताल तक का ट्रैफिक रोकने की कोशिश शुरू हो गई थी। सुबह ठीक 7.51 बजे मेदांता अस्पताल की टीम लिवर लेकर एयरपोर्ट के लिए रवाना हुई। 8 मिनट 54 सेकंड में लिवर एयरपोर्ट पहुंचा। वहीं एक किडनी चोइथराम अस्पताल में ही मरीज को ट्रांसप्लांट की गई। दूसरी किडनी सुबह 8.17 बजे ग्रेटर कैलाश अस्पताल के लिए निकली। 8 मिनट 26 सेकंड में किडनी अस्पताल पहुंची। यहां 55 वर्षीय शरद गर्ग को किडनी ट्रांसप्लांट की गई। -नप्र

बेटे के अंगदान का फैसला लेने में नहीं हिचके पिता

विश्वास के अंगदान करने का पहला निर्णय पिता जवाहर डोसी ने लिया। डोसी ने बताया कि 1993 में पिता की मृत्यु के बाद चोइथराम अस्पताल में नेत्रदान नहीं हो पाया था, तब नेत्रदान के लिए बहुत परेशान हुआ। आखिर पिता का शव लेकर गीता भवन अस्पताल पहुंचा। तीन घंटे बाद जैसे-तैसे पिता का नेत्रदान हो सका। वहीं बीते महीने मां की मौत के बाद भी उनके नेत्रदान किए। अब युवा बेटे की मौत भी पिता के हिम्मत को नहीं डिगा सकी। उन्होंने खुद अंगदान का फैसला किया और अपनी बहू गरिमा की भी सहमति ली।

बेटे के लिवर को प्रणाम कर विदाई देते पिता जवाहर डोसी।

चार महीने में पांचवीं बार बना ग्रीन कॉरिडोर

अंगदान के मामले में शहर रिकॉर्ड कायम करने जा रहा है। चार महीने में इंदौर में पांचवी बार ग्रीन कॉरिडोर बनाकर अंग दूसरे शहर भेजे गए। इसकी शुरुआत नवंबर 2015 में रामेश्वर खेड़े के अंगदान से हुई थी। पहली बार शहर में ग्रीन कॉरिडोर बनाकर लिवर गुड़गांव स्थित मेदांता अस्पताल भेजा गया था।

अंगदान करने वाले पिता को बेटी ने दी मुखाग्नि

महिदपुर। इंदौर से सुबह 11.30 बजे विश्वास डोसी की देह यहां पहुंची तो लोग नम आंखों के बीच गर्व से अंतिम विदाई देने पहुंचे। एक बजे जवाहर मार्ग स्थित जवाहर गली से शुरू हुई अंतिम यात्रा में सैकड़ों लोग शामिल हुए। विश्वास को 15 वर्षीय बेटी श्रेष्ठी ने मुखाग्नि दी। विश्वास का चार माह पहले ही दिल के वॉल्व का सफल ऑपरेशन हुआ था।

बच गई तीन जिंदगी

फिर बने दो ग्रीन कॉरिडोर

बेटे ने दी मुखाग्नि

विश्वास के पिता बोले

'बेटे को राख का ढेर नहीं बनने देना चाहता था, इसलिए किए अंगदान... अब वह तीन शरीर में जिंदा रहेगा'

8.04 मिनट में 10.4 किमी का सफर

एक साल से चल रहा था इलाज

देह त्यागने के बाद भी दुर्गेश ने जीत लिए दुर्गम दुर्ग

मौत को भी मात दे गया खिलाड़ी दुर्गेश

- धामनोद के 21 वर्षीय श्री दुर्गेश मालवीय जिन्दगी को भरपूर जीने की तमन्ना से भरे ताइक्वांडो चैंपियन थे। उन्होंने ताइक्वांडो के राष्ट्रीय खिलाड़ी के रूप में अपनी पहचान बनाई थी।
- दूसरों की भरसक मदद करना उनकी जीवनचर्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था।
- वे स्पोर्ट्स कोच के रूप में अपने विद्यार्थियों का दिल जीत चुके थे, वे अपने स्टूडेंट्स को धामनोद जैसे छोटे से कस्बे में राष्ट्रीय स्तर का प्रशिक्षण दे रहे थे। और चाहते थे कि उनके स्टूडेंट्स राष्ट्रीय क्षितिज पर धामनोद का नाम रोशन करें।
- बाहरवीं में पढने वाले दुर्गेश ने खेलकूद की दुनिया में 50 से अधिक मैडल हासिल कर छोटी सी उम्र में बड़ा नाम कमाया था।
- तीन बहनों के एकलौते भाई दुर्गेश के असमय देहावसान ने धामनोद का नाम खेलकूद की दुनिया में अमर करने का उनका सपना तो लील लिया मगर अंगदान की इतिहास में धामनोद को वे नई पहचान दिला गए हैं।
- आज उनके दिल, उनकी किडनियों, उनके जीगर, उनकी त्वचा और कार्नियां ने कई लोगों की हारी हुई जिन्दगी को जीत का ईनाम दिया है।
- दुर्गेश के पिता श्री प्रेमलालजी का कहना था कि विश्वास ही नहीं हो रहा कि उनका बेटा इतने लोगों को जीवन दे गया है।
- हम नतमस्तक होकर मालवीय परिवार का अभिनन्दन करते हैं।

अपने लिए जिए तो क्या जिए

पत्रिका | सिटी @ SUNDAY | 03

इंदौर ने पार की जिंदगी बचाने की छठी पायदान } ताइक्वांडो में नेशनल लेवल पर ब्लैक बेल्ट जीतने वाले दुर्गेश ने चार को दी जिंदगी

'जिंदगी' दिखी तो 'भगवान' बोले धन्यवाद इंदौर

इंदौर @ पत्रिका
mp.patrika.com

जिंदगी देने के लिए विश्वासमंद बने इंदौर ने शुक्रवार को एक बार फिर इतिहास रचा। सड़क हादसे में ब्रेन डेड दुर्गेश मालवीय ने दिल, जिगर और दोनों किडनी देकर चार लोगों को नया जीवन दिया। ताइक्वांडो में ब्लैक बेल्ट जीतने वाले दुर्गेश के अंगों को जीवन देने के लिए एक बार फिर शहर थमा। दिल लेकर मुंबई जा रहे धरती के भगवान कहलाने वाले डॉक्टरों ने धन्यवाद इंदौर बोलकर अंगदान करने वाले परिजन, पुलिस-प्रशासन सभी का मान बढ़ा दिया। दुर्गेश की आंखें एमके इंटरनेशनल आई बैंक और त्वचा चोइथराम हॉस्पिटल के स्किन बैंक में सुरक्षित रखी है। जिंदगी बचाने के लिए इंदौर ने छठी पायदान पार की।

खेल गतिविधियों में हमेशा आगे रहा दुर्गेश।

किडनी को अरबिंदो अस्पताल ले जाती एंबुलेंस

लिवर को एयरपोर्ट ले जाती एंबुलेंस

किसी को जीवन देगा बेटा, इससे बढ़कर कुछ नहीं

मेरा बेटा स्पोर्ट्स में कुछ बड़ा करना चाहता था। ताइक्वांडो में वह गोल्ड मेडलिस्ट है। ब्लैक बेल्ट भी हासिल किया। हादसे ने हमारे अरमानों पर पानी फेर दिया। दामाद राकेश जायसवाल ने हमें अंगदान के लिए प्रेरित किया। मेरा बेटा किसी को जिंदगी देगा, किसी में जिएगा। इससे बढ़कर मेरे लिए कुछ नहीं है।
-प्रेमलाल मालवीय, दुर्गेश के पिता

इंदौर के लिए सुकून की बात है

फोर्टिस अस्पताल में भर्ती उड़ीसा निवासी युवक को हार्ट ट्रांसप्लांट किया गया। बीपीएल कार्डधारी होने के कारण उसे उड़ीसा के मुख्यमंत्री के कोष से तीन लाख रुपए दिए गए। फोर्टिस हॉस्पिटल ने भी उसका निशुल्क इलाज किया। लिवर 105 किलो वजन के व्यक्ति को लगाया है। अंगदान के जरिए जरूरतमंद लोगों को जिंदगी मिलना इंदौर के लिए सुकून की बात है। जरूरतमंद मरीजों के लिए आगे भी ऐसे कार्य जारी रहेंगे।
संजय दुबे, कमिश्नर इंदौर

स्पोर्ट्समैन दुर्गेश का हर अंग निकला फिट

बड़वानी जिले के ग्राम भवती निवासी छात्र दुर्गेश (21) पिता प्रेमलाल ने 50 से अधिक मेडल जीते हैं। 12वीं की पढ़ाई कर रहा दुर्गेश दो माह से जीजा राकेश जायसवाल निवासी 159, इंद्रपुरी कॉलोनी के यहां रहकर पढ़ाई कर रहा था। धामनोद के एक स्कूल में स्पोर्ट्स का कोच भी था। 2 मार्च को एबी रोड पर धामनोद में उसकी बाइक दीवार से टकरा गई थी। दुर्गेश युवा होने के साथ स्पोर्ट्समैन था, इसलिए उसके सभी अंगों की फंक्शनिंग अच्छी थी।

तीन बार ग्रीन कॉरिडोर

1. दिल लेकर पहली एंबुलेंस दोपहर 12.29 बजे चोइथराम हॉस्पिटल से निकली और 12.38 बजे (9 मिनट में) एयरपोर्ट पहुंच गई। जेट के विमान से इसे दोपहर 12.50 बजे मुंबई भेज दिया गया।
2. दोपहर 1.22 बजे चोइथराम हॉस्पिटल से दूसरी एंबुलेंस से लिवर निकला और 1.31 बजे (9 मिनट 20 सेकंड में) एयरपोर्ट पहुंचा। लिवर को मेदांता गुड़गांव भेजने के लिए दिल्ली से प्लेन दोपहर 1.57 बजे इंदौर पहुंचा और 2.25 बजे दिल्ली के लिए उड़ान भरी।
3. लिवर के साथ दूसरी एंबुलेंस में अरबिंदो हॉस्पिटल के लिए किडनी भेजी गई, जो एयरपोर्ट गेट से अरबिंदो हॉस्पिटल की ओर चली गई।

दो बार ब्रेन डेड घोषित

शुक्रवार शाम 7.30 बजे पहली बार मेदांता हॉस्पिटल के डॉक्टरों ने दुर्गेश को ब्रेन डेड घोषित किया। रात 1 बजे दोबारा ब्रेन डेड सर्टिफिकेशन कमेटी में शामिल डॉक्टरों ने ब्रेन डेड घोषित किया। शनिवार सुबह 6.30 बजे उसे मेदांता हॉस्पिटल से चोइथराम हॉस्पिटल शिफ्ट किया गया। इसके बाद गुड़गांव में लिवर और फोर्टिस में दिल के मरीज की शिनाख्त की जा सकी।

सभी ट्रांसप्लांट सफल

सभी ट्रांसप्लांट सफल रहे। जिस मरीज को हार्ट लगाया गया, वह कार्डियोमायोपैथी से पीड़ित था। लिवर पाने वाले मरीज को सिरोसिस बीमारी थी। किडनी के मरीज 5 साल से डायलिसिस पर थे।
डॉ. संजय दीक्षित, सचिव, इंदौर अंगदान सोसायटी

अंगदान | दिल मुंबई, लिवर गुड़गांव और किडनी शहर के दो अस्पतालों को दान, शहर में एक साथ बने तीन ग्रीन कॉरिडोर

खिलाड़ी दुर्गेश चार लोगों को दे गया नई जिंदगी

भास्कर संवाददाता. इंदौर

एक बार फिर शनिवार को शहर का व्यस्त यातायात तीन बार रोका गया। 21 साल के ब्रेन डेड ताइक्वांडो चैम्पियन दुर्गेश मालवीय का हार्ट, लिवर व किडनी जरूरतमंद तक तय समय में पहुंचाने के लिए चोइथराम अस्पताल से तीन बार ग्रीन कॉरिडोर बनाए गए। हार्ट मुंबई के फोर्टिस अस्पताल भेजा गया। लिवर गुड़गांव के मेदांता अस्पताल भेजा गया। वहीं एक किडनी अरबिंदो अस्पताल भेजी गई और दूसरी चोइथराम में ही एक मरीज को ट्रांसप्लांट की। इस तरह ब्रेन डेड दुर्गेश चार लोगों को नई जिंदगी दे गए। छह माह में यह छठा मौका है जब कैडेवर ऑर्गन डोनेशन हो रहा है।

पहले दिल भेजा, फिर लिवर के साथ किडनी

» शनिवार सुबह 6.58 बजे ब्रेन डेड दुर्गेश को मेदांता से चोइथराम अस्पताल शिफ्ट किया गया। दोपहर 12.02 बजे क्लैंपिंग किया गया। 12.28 बजे हार्ट निकाला गया। इसी दौरान पहला ग्रीन कॉरिडोर चोइथराम से एयरपोर्ट के बीच बनाया गया। यहां से 10 मिनट में 12.38 बजे हार्ट एयरपोर्ट पहुंचा। एक बजे फ्लाइट ने उड़ान भरी। दोपहर 2.14 मिनट पर दिल मुंबई के फोर्टिस अस्पताल पहुंचा, जहां एक 21 वर्षीय युवक को लगाया गया।

» इसके बाद अस्पताल से दूसरा ग्रीन कॉरिडोर एयरपोर्ट तक बना। दोपहर 1.20 बजे लिवर यहां से रवाना किया, जो 1.30 बजे एयरपोर्ट पहुंचा, जो पौने दो बजे गुड़गांव के लिए रवाना हुआ। दोपहर 3.45 बजे गुड़गांव के अस्पताल पहुंचा, जहां 54 वर्षीय एक व्यक्ति को ट्रांसप्लांट किया गया।

» तीसरा ग्रीन कॉरिडोर दूसरे के साथ ही एयरपोर्ट तक बना। एयरपोर्ट तक लिवर के साथ ही एक किडनी भेजी गई। यहां से श्री अरबिंदो इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस इंदौर किडनी को भेजा गया।

लिवर और किडनी एक साथ एयरपोर्ट के लिए ले जाती डॉक्टरों की टीम।

जल्द ही शहर में भी हार्ट व लिवर ट्रांसप्लांट होंगे

मरीज के अस्पताल आने से पहले रातभर में सारी तैयारियां कर ली थी। हमारे यहां से हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. सुनील दुबे को हार्ट के साथ फोर्टिस अस्पताल ट्रेनिंग के लिए भेजा है। जल्द ही इंदौर में हार्ट व लिवर प्रत्यारोपण सेंटर शुरू करेंगे।
– डॉ. अमित भट्ट, डिप्टी डायरेक्टर चोइथराम अस्पताल

शुक्रवार को रातभर चलती रही प्रक्रिया

अंगदान के लिए शुक्रवार को रातभर प्रक्रिया चलती रही। शाम 7.30 बजे डॉक्टरों ने दुर्गेश को पहली बार अधिकृत रूप से ब्रेन डेड घोषित किया। इसके बाद रात 1.30 बजे दूसरे मेडिकल बोर्ड ने जांचकर उसे दोबारा ब्रेन डेड घोषित किया। मेदांता अस्पताल गुड़गांव से चार्टर्ड विमान आया वहीं फोर्टिस अस्पताल से डॉक्टरों की टीम सुबह पहुंची। चोइथराम अस्पताल की टीम ओटी में तैनात रही। दोनों अस्पताल की टीम के साथ चोइथराम के डॉ. सुनील चांदीवाल, डॉ. राजेन्द्र भटनागर, डॉ. अजय जैन, डॉ. नितिन शर्मा, डॉ. दिगंत पाठक ने सहयोग किया। वहीं मुस्कान ग्रुप के पदाधिकारियों का भी सहयोग रहा।

किसी को धड़कन ,किसी को सांसे तो किसी को दृष्टि दे गयी सोनिया

- ट्रक ड्राइवर श्री गणेश चौहान की लाड़ली बिटिया बीस वर्षीय सोनिया चौहान स्कूल में पढने वाली एक होनहार लड़की थी।
- सोनिया संगीत, कूकिंग और घर के कार्यों में निपुण थी।
- बीमारी से लड़ते हुए उसने कभी हार नहीं मानी थी, वह जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखती थी।
- उसके आकस्मिक देहावसान के बाद उसके दिल, लीवर और कार्निया ने कुछ लोगों के जीवन में खुशियां भर दी हैं।
- हम तहे दिल से चौहान परिवार का अभिनन्दन करते हैं।

इन्दौर का दिल अब मुम्बई में धड़क रहा है

दबंग दुनिया

मुंबई के दिल में जिंदा रहेगी इंदौर की सोनिया

पहली बार दिल ने किया 650 किमी सफर | ग्रीन कॉरिडोर बनाकर 20 वर्षीय लड़की का दिल मुंबई, लिवर दिल्ली भेजा गया

4 घंटे में इंदौर की बेटी का दिल मुंबई की बेटी में धड़कने लगा

पिता बोले- यही सुकून है कि मेरी बच्ची दूसरों के शरीर में जिंदा है

इंदौर पहला शहर जहां दानदाता परिवार का होता है मेडिकल इंश्योरेंस

इंदौर की सजगता को सलाम

किसी को धड़कन, किसी को सांसें, किसी को दृष्टि दे गई सोनिया - पेज 2

और आज पप्पू कई लोगों में जिन्दा है

- चार बहनों का इकलौता भाई 21 वर्षीय पप्पू डावर डेढ़ साल के पुत्र का पिता था ।
- श्री रमेश डावर के इस युवा पुत्र ने अपने परिवार की जिम्मेदारी बखूबी सम्भाल रखी थी ।
- पप्पू अपने बच्चे को उच्च शिक्षा दिलाने का सपना संजोएं ही इस दुनिया को छोड़कर चला गया, हालांकि पप्पू की पत्नी के सपने टूट चुके हैं परन्तु पप्पू चार लोगों के टूट चुके सपने अचानक साकार कर नए इतिहास की रचना कर गया है ।
- दो व्यक्तियों दिल और लीवर तथा दो लोगों को किडनियां मिली हैं और पप्पू की त्वचा तथा कार्निया अनेक लोगों में जीवित रहेंगे ।
- हम डावर परिवार का इस अनुकरणीय कार्य हेतु अभिनन्दन करते हैं ।

मनावर का दिल अब दिल्ली में धडक रहा है

फिर बना ग्रीन कॉरिडोर

मनावर का दिल अब दिल्ली में धड़केगा

सड़क हादसे में मृत युवक का दिल और लिवर भेजे दिल्ली

इंदौर। ब्रेनडेड घोषित होने के बाद जाजमखेड़ी (मनावर तहसील) के पप्पू डावर का दिल और लिवर एक साथ दिल्ली भेजे गए। इसके लिए सोमवार सुबह ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया। अस्पताल से सुबह 7.26 बजे अंग रवाना किए गए, जो 7.35 बजे एयरपोर्ट पहुंचे। 8.20 पर जेट की फ्लाइट ने उड़ान भरी और लगभग 9.30 बजे दिल्ली उतरी। करीब 10 बजे अंग अस्पतालों में पहुंच गए। यह तीसरा मौका है जब प्रत्यारोपण के लिए इंदौर से दिल भेजा गया, जबकि लिवर भेजने का यह सातवां मौका है।

सड़क हादसे में गंभीर घायल पप्पू को बेसुध हालत में परिजन अरबिंदो अस्पताल लाए थे। रविवार दोपहर करीब 2 बजे डॉक्टरों द्वारा ब्रेनडेड घोषित किए जाने के बाद परिवार ने उसके अंग दान करने का फैसला लिया। तुरंत इसकी सूचना नाटो को दी गई। अंगदान समिति के सचिव डॉ. संजय दीक्षित ने बताया कि दिल अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के 28 साल के युवक और लिवर इंस्टीट्यूट ऑफ लिवर एंड बिलिअरी साइंसेस में भर्ती 22 साल के युवक को प्रत्यारोपित किया गया। एक मरीज क्रिप्टोजेनिक सिरॉसिस जैसी गंभीर बीमारी से जूझ रहा था। उसके लिवर ने काम करना बंद कर दिया था। वहीं हार्ट के मरीज को कार्डियोमायोपैथी बीमारी थी। इसमें दिल की मसल्स की पंपिंग क्षमता खत्म हो जाती है। एक किडनी ग्रेटर कैलाश अस्पताल में 32 वर्षीय महिला को और दूसरी अरबिंदो के 42 वर्षीय पुरुष को लगाई गई। पहली बार चोइथराम अस्पताल के अलावा दूसरे अस्पताल अरबिंदो में ऑर्गन रिट्राइवल (अंग निकाले) किया गया।

पप्पू डावर के अंग एयरपोर्ट से दिल्ली ले जाते अधिकारी।

पांच महीने में सात बार बने कॉरिडोर

सड़क हादसे में घायल खरगोन के रामेश्वर खोड़े (40) को ब्रेनडेड घोषित करने के बाद परिजन ने उनका लिवर, किडनी, त्वचा और आंखें दान कीं। लिवर गुड़गांव के मेदांता अस्पताल भेजा गया। किडनी इंदौर ही में दो मरीजों में ट्रांसप्लांट की गई।

ब्रेन हेमरेज के बाद रमेश असनाना (59) को ब्रेनडेड घोषित किया गया। लिवर मेदांता अस्पताल में भर्ती मरीज के लिए और किडनी इंदौर ही के दो अस्पतालों को दान की गई।

साल की सोनिया को ब्रेनडेड घोषित करने के बाद परिजन ने अंगदान का फैसला लिया। पहली बार शहर में दिल के लिए ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया। दिल मुंबई के फोर्टिस अस्पताल भेजा गया, जबकि लिवर दिल्ली के लिवर इंस्टीट्यूट भेजा गया। पहली बार एक साथ तीन राज्यों में ग्रीन कॉरिडोर बनाए गए।

सड़क हादसे में घायल वर्षा को ब्रेनडेड घोषित करने के बाद लिवर दिल्ली भेजा गया, जबकि किडनी इंदौर के अस्पतालों में भर्ती मरीजों को लगाई गई।

दिमाग में रक्तस्राव के बाद महिदपुर के विश्वास का लिवर गुड़गांव के मेदांता अस्पताल को भेजा गया। किडनी इंदौर और दिल्ली के मरीजों को प्रत्यारोपित की गई।

सड़क हादसे में घायल खतिया के दुर्गेश मालवीय की ब्रेनडेथ के बाद दिल फोर्टिस अस्पताल मुंबई, लिवर मेदांता गुड़गांव और किडनी इंदौर के अस्पतालों में भर्ती मरीजों को दान की गई।

मनावर के जाजमखेड़ी निवासी पप्पू को ब्रेनडेड घोषित करने के बाद उसका दिल और लिवर दिल्ली रवाना किए गए। किडनी, आंखें और त्वचा भी दान की गईं।

जिंदगियां देने के लिए सातवीं बार बना कॉरिडोर, हार्ट और लिवर पहुंचा दिल्ली, किडनी अरबिंदो और ग्रेटर कैलाश अस्पताल पहुंचाई

एक फोटो एक याद छोड़ गया अंगदाता पप्पू

दबंग रिपोर्टर • इंदौर

शहर में सोमवार को सातवीं बार ग्रीन कॉरिडोर बना। इस बार मजदूर पिता ने अपने बेटे पप्पू (21) के अंगदान का जज्बा दिखाया। चार बहनों का इकलौता भाई व डेढ़ साल के बच्चे के पिता पप्पू का हार्ट, लिवर दिल्ली व किडनी अरबिंदो व ग्रेटर कैलाश अस्पताल में मरीजों को ट्रांसप्लांट की गई।

मजदूर परिवार के पप्पू की आर्थिक स्थिति का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि परिवार के पास उसका केवल एक फोटो था। वो भी कुछ महीने पहले का है जब वो अपने दोस्तों के साथ किसी तीर्थ स्थल पर गया था वहीं खिंचवाया था। सोमवार सुबह गांव से आए रिश्तेदार फोटो भी लाए थे। मनावर जिले के जाजमखेड़ी के पप्पू पिता रमेश डावर को एक्सीडेंट के बाद अरबिंदो अस्पताल में भर्ती किया गया था। जहां डॉक्टरों ने रविवार को ब्रेनडेड घोषित किया। सोमवार तड़के करीब 3.30 बजे डॉक्टरों ने दिल्ली के एम्स व आईएलबीएस (इंस्टिट्यूट ऑफ लिवर एवं बिलियरी साइंस) के डॉक्टरों की टीम के साथ आर्गन हार्वेस्टिंग प्रक्रिया शुरू की।

नौ मिनट में पहुंचे एअरपोर्ट

करीब सात बजे एम्स के डॉक्टर ने हार्ट और आईएलबीएस के डॉक्टर ने लिवर को एक बॉक्स में पैक किया। 7.26 बजे दोनों बॉक्स को लेकर अरबिंदो से सुपर कॉरिडोर होते हुए 9 मिनट में एअरपोर्ट पहुंचे। 8.10 बजे की फ्लाइट से दोनों आर्गन को दिल्ली रवाना किया गया। इस बीच 7.50 बजे एक किडनी ग्रेटर कैलाश अस्पताल के लिए रवाना की गई। यह आठ मिनट में अस्पताल पहुंची।

रात में ही आ गए थे दिल्ली के डॉक्टर

रविवार रात को ही दिल्ली से एम्स के डॉ. मिलिंद और आईएलबीएस के डॉ. किशोर कुमार टीम सहित आ गए थे। रात सवा दो से ढाई के बीच पप्पू को ओटी में लिया गया। जहां दिल्ली के डॉक्टरों के साथ अस्पताल के डॉ. सौरभ वितले, डॉ. रूबिना बोहरे और डॉ. सीपी सिंह की टीम ने आर्गन हार्वेस्टिंग का काम शुरू किया।

ग्रीन कॉरिडोर बनाने के लिए पलासिया थाने के सामने तिराहे पर ट्रैफिक रोका गया।

अंतिम समय तक नहीं दी बहू को खबर

बेटे के ब्रेनडेड की सूचना के बाद अस्पताल के डॉक्टर, मुस्कान ग्रुप और सेवादार पप्पू के अंगदान करने के लिए रमेश की काउंसिलिंग कर रहे थे। बेटे का असमय चले जाना और अब अंगदान की कश्मकश में रमेश कोई निर्णय नहीं ले पा रहा था। बहू को सदमा न लगे इसके लिए परिजन ने अंतिम समय तक नहीं बताया।

शाहीन बी

काउंसिलिंग से एअरपोर्ट तक का जिम्मा 'मुस्कान' का

अंगदान को लेकर परिजनों की काउंसिलिंग करने से लेकर डॉक्टरों को लाने और आर्गन ले जाते समय डॉक्टरों का बोर्डिंग पास बनवाने तक का जिम्मा मुस्कान ग्रुप के पास था। ग्रुप के संदीपन आर्य, जीतू बगानी, नरेश फुंदवानी, राजेंद्र माखीजा और दीपक बाबा सहित अन्य सेवादारों ने अलग-अलग जिम्मेदारी संभाल रखी थी।

सभी मरीज ऑब्जर्वेशन में

पप्पू का हार्ट और लिवर सुबह करीब 9.30 बजे दिल्ली पहुंच गए थे। इसके लिए वहां भी ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया। एम्स में 28 साल के युवक को हार्ट ट्रांसप्लांट किया गया। उसके हार्ट की सभी नसें बंद हो गई थी। इसी प्रकार आईएलबीएस में पहुंचा लिवर 22 साल के युवक को लगाया गया, जबकि अरबिंदो अस्पताल में 28 साल के युवक और ग्रेटर कैलाश अस्पताल में 32 साल की महिला शाहीन को लिवर ट्रांसप्लांट किया गया।

एमवायएच के डॉक्टरों ने भी सीखी प्रक्रिया

एमवायएच को भी रिट्रीवल सेंटर बनाने की तैयारी पूरी हो गई। कुछ औपचारिकताएं शेष हैं। इसे देखते हुए अस्पताल प्रबंधन ने एमवायएच के सर्जन और एक एनेस्थिसिया विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर को भी भेजा था, ताकि वे हॉर्वेस्टिंग प्रकिया को सीख सकें।

दीपक ने रोशन की चार जिन्दगियां

- पढ़ाई करते हुए अपने परिवार के आर्थिक सहयोग के लिए न्यूज़ पेपर वेंडर का काम करने वाले 18 वर्षीय श्री दीपक दकेता बेहद कर्मठ और साहसी युवक थे ।
- वे जिन्दगी में सफलता की नई ऊंचाइयां हासिल कर परिवार को सुख समृद्धि का उपहार देना चाहते थे ।
- दीपक के असमय देहावसान से शोक संतप्त उनके नानाजी ने अपने परिजनों को अंगदान के लिए सहमत करने का अद्भुत काम किया ।
- दीपक के दिल, लीवर, किडनियों, त्वचा और कार्निया ने अनेकों परिवारों के जीवन को देदीप्यमान कर दिया है ।
- हम दकेता परिवार का इस अनुकरणीय कार्य हेतु अभिनन्दन करते हैं।

वो दीपक क्या बूझे जिसे रोशन खुदा करें

ग्रीन कॉरिडोरः बेटे के दिल को मां ने किया विदा

18 साल का दीपक दे गया चार को नई जिंदगी

भास्कर संवाददाता | इंदौर

शहर में सात महीने में नौवीं बार ग्रीन कॉरिडोर बना। गुरुवार को ब्रेन डेड 18 साल के दीपक धनेता के अंगदान किए गए। दिल मेदांता हॉस्पिटल गुड़गांव, लिवर दिल्ली के आईएलबीएस और दोनों किडनियां शहर में ही दो अस्पतालों में दी गई। इससे चार लोगों को नई जिंदगी मिली। पहला कॉरिडोर अरबिंदो अस्पताल से सुबह 11.23 बजे एयरपोर्ट तक बना, जिससे दिल करीब आठ मिनट में एयरपोर्ट पहुंचा। यहां से मेदांता के चार्टर्ड विमान से उसे गुड़गांव भेजा गया, जहां 52 साल की एक महिला को ट्रांसप्लांट किया गया। दूसरा कॉरिडोर 12.04 बजे एयरपोर्ट के लिए बना और लिवर पहुंचाया। उसे नियमित उड़ान से दिल्ली भेजा, जहां 56 वर्षीय एक व्यक्ति को लगाया। तीसरा कॉरिडोर अरबिंदो से चोइथराम अस्पताल के लिए बना और एक किडनी भेजी, जिसे 45 वर्षीय व्यक्ति को लगाई। दूसरी किडनी अरबिंदो में भर्ती 50 साल की महिला को दान की। गौरी नगर का दीपक 23 अप्रैल को सड़क हादसे का शिकार हो गया था।

दीपक धनेता

18 वर्षीय दीपक धकेता का दिल पहुंचा गुड़गांव, लीवर दिल्ली और किडनी इंदौर में

बॉक्स में रखे धड़कते दिल की ओर देखकर सुबकती रही मां

दबंग रिपोर्टर ■ इंदौर

गुरुवार को पुनः शहर के एक परिवार ने अपने प्रिय के ब्रेन डेड घोषित होने के बाद अंगदान कर मानवता की नई इबारत लिखी। इसके चलते सात माह में इंदौर में गुरुवार को नौवीं बार ग्रीन कॉरिडोर बना। खास बात यह कि इसके लिए तीन कॉरिडोर बनाए गए। इनके माध्यम से ब्रेन डेड घोषित 18 वर्षीय दीपक धकेता के अंगों को गुड़गांव, दिल्ली और शहर के अन्य अस्पताल में जरूरतमंद मरीजों के लिए पहुंचाया गया। दीपक की मां उस बॉक्स को एकटक देखती रही, जिसमें उनके बेटे का धड़कता दिल ले जाने के लिए रखा गया था।

पहला कॉरिडोर

सबसे पहले मेदांता हॉस्पिटल गुड़गांव के डॉक्टर किशोर कुमार के नेतृत्व में दीपक के दिल को लेकर सुबह 11.24 बजे अरबिंदो हॉस्पिटल से एअरपोर्ट तक ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया। यह 11.32 बजे आठ मिनट में पूरा हुआ। एअरपोर्ट पर मेदांता अस्पताल के डॉक्टरों की टीम पहले से ही तैयार थी, जो दीपक के दिल को लेकर चार्टर प्लेन से लेकर तत्काल दिल्ली रवाना हो गई।

दूसरा कॉरिडोर

आई एलबीएस हॉस्पिटल दिल्ली के डॉक्टर दीपक के लीवर को लेकर अरबिंदो से दोपहर 12.04 बजे निकले। यह दल 12.12 बजे एअरपोर्ट पहुंचा। इस कॉरिडोर में भी आठ मिनट का समय लगा। यहां से डॉक्टरों की टीम जेट एयरवेज की फ्लाइट से दिल्ली रवाना हुई।

तीसरा कॉरिडोर

तीसरा कॉरिडोर दीपक की किडनी के लिए अरबिंदो हॉस्पिटल से दोपहर 12.29 बजे चोइथराम हॉस्पिटल तक बनाया गया। डॉक्टरों की टीम किडनी लेकर 12.47 बजे 18 मिनट में चोइथराम अस्पताल पहुंची।

दे गया दूसरों को जिंदगी

गौरी नगर निवासी दीपक पिता मनोज धकेता का एक्सीडेंट हो गया था। परिवार और डॉक्टरों की लाख कोशिशों के बावजूद बचने की कोई उम्मीद नहीं रहने पर दीपक को ब्रेन डेड घोषित किया गया। इसकी जानकारी मिलते ही दीपक की मा मधु और अन्य परिजन पर दुःखों का कहर टूट पड़ा। इस बीच मुस्कान ग्रुप के सदस्यों ने दीपक के परिजन से संपर्क कर उन्हें अगदान के लिए प्रेरित किया। नाना शिवरतन ने बात को समझकर अन्य परिजन को अगदान के लिए राजी किया। ग्रीन कॉरिडोर बनते समय दीपक की मा ने कहा कि मेरा बेटा मरकर भी दूसरों को जिंदगी दे गया।

रमेश, अब कई शरीरों में रम गए

- सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रमों में सेवा देने वाले 59 वर्षीय श्री रमेश असरानी रियल इस्टेट का व्यवसाय करते थे ।

- किसी को भी कल्पना नहीं थी कि उनके अंग मरणोपरांत कई लोगों की सेवा करेंगे ।

- उनकी पत्नी सविताजी, पुत्र सन्नी और भतीजे हितेश ने मुस्कान ग्रुप की प्रेरणा से स्व. रमेश के लीवर, किडनियों, त्वचा और कार्निया का दान कर श्री रमेश के सेवा कार्यों को अनुपम रूप दिया है ।

- हम नतमस्तक होकर असरानी परिवार का अभिनन्दन करते हैं ।

जाते जाते जिंदगीयो का तोहफा दे गए रमेश

अस्पताल से एयरपोर्ट तक नौ मिनट में लिवर पहुंचाया

अंग ले जाने के लिए देश में पहली बार इंदौर में दो ग्रीन कॉरिडोर बने

भास्कर संवाददाता | इंदौर

एक महीने बाद फिर एक और ब्रेन डेड मरीज तीन लोगों को जिंदगी दे गया। इस बार साहस जुटाया असरानी परिवार ने। मंदसौर और इंदौर के दो मरीजों को किडनी लगाई गई। विशेष विमान से लिवर को दो घंटे 28 मिनट में इंदौर से गुड़गांव के अस्पताल तक पहुंचाया गया। खास बात यह रही कि इस बार अंगों को समय पर पहुंचाने के लिए दो ग्रीन कॉरिडोर बनाए और दो अस्पतालों को किडनी भेजी गई। देर शाम तक तीनों के ऑपरेशन हो चुके थे। इससे पहले 7 अक्टूबर को ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया था जब ब्रेन डेड रामेश्वर खेड़े का उनके परिवार ने अंगदान किया था। देश में यह पहला मौका है जब एक ही शहर में एक साथ दो ग्रीन कॉरिडोर बनाए गए।

पलसीकर कॉलोनी निवासी 59 वर्षीय रमेश शिरूमल असरानी को तीन दिन पहले ब्रेन हेमरेज हुआ। पत्नी सविता और बेटा सन्नी तुरंत भंवरकुआं स्थित आनंद हॉस्पिटल ले गए लेकिन शनिवार को ही डॉक्टरों ने कहा कि उन्हें बचाना संभव नहीं है। भतीजे हितेश ने मुस्कान ग्रुप के सेवादार जीतू बगानी को फोन कर नेत्रदान की इच्छा जताई। काउंसलिंग के लिए बगानी तत्काल अस्पताल पहुंचे तो देखा- मरीज ब्रेन डेड है और उनके अंग दूसरों को जिंदगी दे सकते हैं। परिजन इसके लिए तैयार हुए लेकिन एक समस्या आ गई कि यह अस्पताल अंग निकालने या प्रत्यारोपण के लिए अधिकृत नहीं है। शनिवार दोपहर 2.17 बजे संभागायुक्त संजय दुबे को इस बारे में बताया। इसके बाद सरकारी अमला सक्रिय हुआ। सुबह 10.45 बजे ऑपरेशन शुरू किया गया। 11.44 बजे लिवर निकाला। 11.46 बजे एयरपोर्ट के लिए रवाना हुआ, 11.55 बजे एयरपोर्ट पहुंचा। 12.20 बजे फ्लाइट ने टेकऑफ किया। दोपहर 2.48 बजे लिवर मेदांता हॉस्पिटल के ओटी में पहुंचा।

विशेष विमान से लिवर को दो घंटे 28 मिनट में इंदौर से गुड़गांव के अस्पताल पहुंचाया गया। इनसेट : मौत के बाद तीन लोगों को जिंदगी देने वाले रमेश शिरूमल असरानी।

खरीदारी कर रहे थे, फोन आते ही अस्पताल पहुंचे

विदिशा के दीपक एक साल से इंदौर में डायलिसिस करा रहे थे। छोटे भाई अखिल ने बताया दिवाली की खरीदारी के लिए बाजार में थे तभी अस्पताल से फोन आया। कहा ओ-पॉजिटिव ग्रुप के डोनर की किडनी मिल सकती है। यह सुनते ही भैया खुश हो गए। हम तुरंत अस्पताल पहुंचे। मम्मी-पापा भी विदिशा से आ गए। दूसरी किडनी मंदसौर की 66 वर्षीय महिला को लगाई है।

रातभर जागकर मरीज को संभालते रहे डॉक्टर्स

पहले कॉरिडोर से लिवर को चोइथराम अस्पताल से एयरपोर्ट पहुंचाया। दूसरे कॉरिडोर से एक किडनी को बॉम्बे हॉस्पिटल पहुंचाया। ट्रैफिक अधिकारी अस्पताल प्रबंधन से संपर्क में रहे कि 15 मिनट पहले उन्हें सूचना दे दें। रमेश असरानी के परिजनों से जब मुस्कान ग्रुप के बगानी और हरीश छाबड़ा सहित अन्य सेवादारों ने काउंसलिंग की तब तक वे ब्रेन डेड हो चुके थे। अंग निकालने के लिए मरीज को चोइथराम हॉस्पिटल शिफ्ट किया। आईसीयू इंचार्ज डॉ. रतन मरीज की निगरानी करते रहे। नेफ्रोलॉजिस्ट डॉ. प्रदीप सालगिया, डॉ. सुरेश कार्लटन, डॉ. सुनील चांदीवाल ने मेदांता अस्पताल प्रबंधन गुड़गांव से रजामंदी ली। रात को असरानी का बीपी 60 पर पहुंच गया। सुबह 7.30 अस्पताल प्रबंधन ने ब्रेन डेथ सर्टिफिकेट बनवाया। इसके बाद बॉम्बे हास्पिटल से नेफ्रोलॉजिस्ट डॉ. राजेश भराणी टीम के साथ चोइथराम हॉस्पिटल पहुंचे और प्रक्रिया शुरू की।

शहर के लिए गौरव की बात

- अंग ले जाने के लिए एक साथ दो ग्रीन कॉरिडोर बनाना शहर के लिए गौरव की बात है। प्रशासन, एयरपोर्ट अथॉरिटी का काफी सहयोग रहा। ऑर्गन डोनेशन सोसायटी अंग दानदाता के परिवार के मेडिक्लेम सहित स्वास्थ्य सुविधाओं का ध्यान रखेगी। -संजय दुबे, संभागायुक्त
- अस्पतालों के बीच आपसी सामंजस्य से ऑर्गन शेयरिंग का सिलसिला शुरू हुआ है। भविष्य में इससे अलग-अलग अस्पतालों में रजिस्टर्ड मरीजों को लाभ होगा। -डॉ. प्रदीप सालगिया, नेफ्रोलॉजिस्ट चोइथराम अस्पताल
- अंग दान की सूचना रात को ही हमें मिली थी। तत्काल हमने डॉक्टरों की टीम इंदौर भेजी। पिछली बार की तरह इस बार भी एयरपोर्ट से गुड़गांव तक ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया। 28 मिनट में लिवर ओटी तक पहुंच गया था। -डॉ. संदीप श्रीवास्तव, मेडिकल कोऑर्डिनेटर मेदांता इंदौर

इंदौर में भी शुरू करेंगे लिवर ट्रांसप्लांट

- इंदौर में लिवर प्रत्यारोपण की सुविधा जल्द शुरू की जाएगा। दो ऑपरेशन थिएटर तैयार हो गए। किडनी प्रत्यारोपण की सुविधा है। -डॉ. अमित भट्ट, डेप्युटी डायरेक्टर मेडिकल सर्विसेस

गौरव की मातुश्री को इन्दौर का सलाम

- एक काल सेंटर में काम करने वाले इन्दौर निवासी 34 वर्षीय गौरव जैन हर दिल अजीज, हंसमुख, मिलनसार और खुशमिजाज युवक थे।
- परोपकार में विश्वास करने वाले स्व. श्री गौरव की माताजी ने अभूतपूर्व निर्णय लेते हुए अपने लाड़ले के अंगों के दान का निर्णय लिया।
- इंसानियत को नए आयाम देने वाली ममतामयी माता ने गौरव के लीवर, दिल, किडनियों, त्वचा और कार्निया का दान कर अनेकों के जीवन में खुशियां भर दी और इन्दौर का मान बढ़ाया।
- उनके जज्बे को सलाम। स्व.गौरव की दादी और नानी ने अंगदान के भावुक अवसर पर कहा कि ये अंग जिसे भी लगे, वे खूब फले और फूले। जैन परिवार का अभिनन्दन करते हुए हम गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं।

ये इन्दौरी जज्बा है :

चला गया दिल का टुकड़ा फिर भी दूसरों के लिए संवेदना बरकरार

हफ्तेभर में तीसरी बार बना ग्रीन कॉरिडोर

चार जिंदगियों में बढ़ा इंदौर का 'गौरव'

दिल्ली भेजे दिल और लिवर, शहर के मरीजों को ही मिली किडनी

इंदौर @ पत्रिका

mp.patrika.com

ऑर्गन ट्रांसप्लांट के मामले में देशभर में मिसाल बने इंदौर के नाम गुरुवार को एक और उपलब्धि जुड़ गई। ब्रेन डेड युवक के दिल, लिवर व किडनी डॉक्टर, जिला व पुलिस प्रशासन की टीम के सहयोग से सफलतापूर्वक जरूरतमंद लोगों तक पहुंचे। परिजन की इच्छाशक्ति से शहर को चार जिंदगी बचाने का यह 'गौरव' मिल सका। जब एंबुलेंस दिल और लिवर लेकर रवाना हुई तब गौरव की मां, नानी और मामा आंसू नहीं रोक पाए।

कॉल सेंटर में काम करने वाले 34 वर्षीय गौरव जैन रविवार को ऑफिस से घर आते समय दुर्घटना का शिकार हो गए थे। उन्हें सीएचएल अस्पताल में शिफ्ट किया गया। हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। वेंटिलेटर पर सांस ले रहे गौरव के बचने की उम्मीद खत्म हुई तो परिजन ने अंगदान का निर्णय लिया। बुधवार को ही डॉक्टरों ने ट्रांसप्लांट की संभावनाएं तलाशते हुए जांचें की। बुधवार देर रात रात दिल्ली के एम्स व लिवर एंड बिलियरी साइंसेस के डॉक्टरों की टीमें इंदौर पहुंच चुकी थी। स्थानीय डॉक्टरों की देखरेख में सीएचएल अस्पताल में ही अल सुबह ऑर्गन निकालने की प्रक्रिया शुरू हुई। सुबह 7 बजकर 16 मिनट पर दिल और लिवर एंबुलेंस से एयरपोर्ट के लिए रवाना किया। इसके कुछ मिनट बाद ही एक किडनी बॉम्बे अस्पताल भिजवाई। गौरव की एक किडनी सीएचएल अस्पताल में ही ट्रांसप्लांट की गई। रातभर मुस्कान ग्रुप के सदस्य दुःखी परिजनों के साथ रहे।

दिल और लिवर लेकर एयरपोर्ट जाती एंबुलेंस।

फेफड़ों के ट्रांसप्लांट के भी थे प्रयास

डॉक्टरों ने गौरव के फेफड़ों के ट्रांसप्लांटेशन के लिए भी प्रयास किए थे। इसके लिए चेन्नई के एक अस्पताल से भी संपर्क किया गया, लेकिन सीमित अवधि में ट्रांसप्लांट संभव नहीं होने से पहल नहीं हो सकी। गौरव की आंखें एमके इंटरनेशनल आई बैंक व स्किन स्किन बैंक में सुरक्षित रखी है। ऑर्गन डोनेशन सोसायटी के सचिव डॉ. संजय दीक्षित ने बताया, जिन मरीजों को गौरव के ऑर्गन लगाए गए हैं, उनकी हालत अभी स्थिर है।

ऑर्गन रिट्राइवल सेंटर का दर्जा होना जरूरी

ब्रेन डेड मरीजों के ऑर्गन निकालने के लिए अस्पताल के पास ऑर्गन रिट्राइवल सेंटर का दर्जा होना जरूरी है। पहले सिर्फ चोइथराम अस्पताल को ही ऑर्गन निकालने की अनुमति थी। हाल ही में अरबिंदो अस्पताल, बॉम्बे अस्पताल व एमवाय अस्पताल भी ऑर्गन रिट्राइवल सेंटर बने हैं। पिछला ऑर्गन रिट्राइवल बॉम्बे अस्पताल और ये ऑर्गन रिट्राइवल पहली बार सीएचएल अस्पताल से किया गया है। मुस्कान ग्रुप के संदीपन आर्य ने बताया, संभवतः यह पहला मौका है जब 5 दिन में तीन बार ग्रीन कॉरिडोर बनाकर ऑर्गन ट्रांसप्लांट किए गए।

स्वेच्छा से किया अंगदान

सर्जरी के 48 घंटे बाद भी स्थिति में सुधार नहीं होने पर गौरव ब्रेन डेड हो गया था। परिजनों ने स्वेच्छा से अंगदान करने की सहमति दी। लिवर दिल्ली के लिवर एंड बिलियरी साइंस व दिल एम्स भेजा गया। एक किडनी सीएचएल व एक बॉम्बे अस्पताल में भर्ती जरूरतमंद को लगाई जा रही है। **-हरीश तोरानी,** सीईओ व ट्रांसप्लांट कोऑर्डिनेटर, सीएचएल अस्पताल

इंदौर का एक और युवक बना चार लोगों की जिंदगी

नानी-दादी बोलीं, जिसे भी ये अंग लगे, वो खूब फले-फूले

दबंग रिपोर्टर • इंदौर

हर बार हेलमेट पहनने वाला 34 वर्षीय गौरव 6 मार्च को बिना हेलमेट पहने ही निकल गया था। सयाजी के पीछे हुए एक्सिडेंट में उसके सिर पर गंभीर चोट आई थी। सीएचएल अस्पताल में इलाज के दौरान बुधवार को डॉक्टरों ने उसे ब्रेनडेड घोषित कर दिया। गौरव की विधवा मां ने दूसरो की जिंदगी में अपने बेटे को जिंदा रखने के लिए हार्ट, लिवर, किडनी, आंखों के साथ ही स्किन भी दान कर दी। गुरुवार सुबह जब गौरव के अंगों को डॉक्टर अस्पताल से एअरपोर्ट लेकर जा रहे थे तब नानी और दादी भावुक होकर बोलीं, जिसको भी ये अंग लगे वो खूब फले-फूले, खूब जिए।

बना सबसे बड़ा कॉरिडोर

गुरुवार तड़के करीब तीन बजे सीएचएल अस्पताल के डॉक्टरों ने दिल्ली के एम्स (अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान) और आईएलबीएस (इंस्टिट्यूट ऑफ लिवर एवं बिलियेरी साइंस) के डॉक्टरों की टीम के साथ मिलकर आर्गन हार्वेस्टिंग की प्रक्रिया शुरू की। इसके बाद एम्स के डॉक्टर हार्ट और आईएसबीएस के डॉक्टर लिवर को लेकर सुबह 7.16 मिनट पर एअरपोर्ट के लिए रवाना हुए। ये एमआर-10, सुपर कॉरिडोर होते हुए 7.35 बजे एअरपोर्ट पहुंचे। 19.5 किमी का सफर 19 मिनट में पूरा हुआ। ये पहला मौका है जब इतना बड़ा ग्रीन कॉरिडोर बना। किडनी ले जाने के लिए दूसरा कॉरिडोर सीएचएल अस्पताल से बॉम्बे हॉस्पिटल के बीच बना। शेष पेज-5

गौरव के अंगों को ले जाते समय आशीर्वाद देतीं उसकी दादी व नानी।

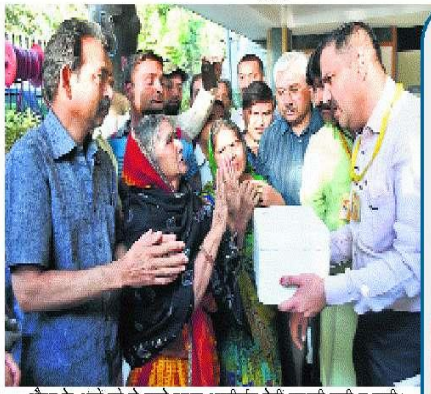

ट्रांसप्लांट के बाद सभी मरीज स्थिर

गौरव का हार्ट एम्स मे 54 वर्षीय महिला, लिवर आईएलबीएस में 52 वर्षीय पुरुष को ट्रांसप्लांट किया गया। बॉम्बे हॉस्पिटल मे किडनी 41 वर्षीय पुरुष और सीएचएल अस्पताल मे 35 वर्षीय महिला को लगी। डॉक्टरों के मुताबिक सभी मरीजों को ऑब्जर्वेशन मे रखा गया है और सभी की हालत स्थिर है।

डॉक्टर से लिपटकर रोने लगा भाई।

वो पढ़ें: जो कहते हैं शहर में हेलमेट क्यों पहने

शहर में पेट्रोल डलवाने के लिए हेलमेट पहनना जरूरी है। बहुत से वाहन चालक इस नियम के पहले अपने सिर की कीमत जानते हैं, इसलिए वाहन चलाते वक्त हेलमेट पहनते हैं। कई आज भी पेट्रोल पंप पर दूसरे का हेलमेट लेकर आवश्यकता के लिए नियम का पालन करते हैं। इनमें से दूसरे प्रकार के लोगों को इंदौर का युवा गौरव जैन एक सीख दे गया है कि हेलमेट जरूर पहनें। चार दिन पहले गौरव बिना हेलमेट पहने दुपहिया वाहन चला रहा था और उसके सिर पर गंभीर चोट आई। भले ही आपका सिर हो, आपकी मर्जी न हो, तो भी हेलमेट पहनिए, क्योंकि गौरव की विधवा मां की तरह आप भी किसी का सहारा हैं, आपको भी कोई बेपनाह मोहब्बत करता है। इसलिए पेट्रोल डलवाने के दौरान ही नहीं, गाड़ी चलाने के दौरान भी हेलमेट पहनिए। दूसरों में जिंदा रहना मानवीयता की मिसाल हो सकता है, लेकिन खुद के लिए जीना क्या बुरा है? देश में अंगदान की मिसाल बन चुके इंदौर ने तीन महीने की अवधि में संभवतः चौथा ग्रीन कॉरिडोर बनाकर दिल्ली में हार्ट और किडनी तथा इंदौर में लिवर पहुंचाया, जो किसी की जिंदगी के लिए वरदान बन गया।

गोपाल बने जिंदगियो के रखपाल

- सामाजिक कार्यक्रमों में सदैव तत्पर रहने वाले गोपाल जी, धार्मिक कार्यक्रमों में भी उतनी ही सहृदयता से अग्रसर रहते थे।

- ये कारीगिरी का काम करते थे तथा तीस वर्ष की अल्पायु में ही मरणोउपरांत भी अपनी कीमियागिरी जारी रख अंगदान कर जिंदगियां दे गए।

- वे समाजजनों व मित्रो को शासकीय योजनायो का उचित लाभ लेने के लिए सदैव जागरूक करते रहते थे तथा साथ ही लाभ लेने में आ रही वाधा को भी दूर करने में सहायक की भूमिका का निर्वहन करते थे।

- एक व्यक्ति भी परिवर्तन ला सकता हे इस विचारधारा को मांनने वाले गोपाल जी के पिताजी ने उनके दिल, लीवर, किडनियों, त्वचा और कार्निया दान कर उनके जीवन के सार को सार्थक कर दिया।

गोपाल की कारीगिरी कर गयी जादूगरी

शहर ने फिर कायम की मिसाल

अब हवा में भी बना ग्रीन कॉरिडोर

एटीसी ने नागपुर और दिल्ली एयरपोर्ट की मदद से फ्लाइट के लिए बनाया डायरेक्ट रूट

पत्रिका लाइव रिपोर्ट

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. ब्रेन डैड मरीजों के ऑर्गन जरूरतमंदों तक पहुंचाने के लिए शहर में बने ग्रीन कॉरिडोर देशभर में मिसाल बने हैं। इस बार एयरपोर्ट प्रबंधन ने भी इन ऑर्गन्स को दिल्ली पहुंचाने के लिए अलग तरह का ग्रीन कॉरिडोर तैयार कर दिया। एटीसी ने नागपुर और दिल्ली एयरपोर्ट से संपर्क कर फ्लाइट को सामान्य से कम समय में लैंड करवाने में सफलता हासिल की।

ब्रेनडैड रामगोपाल तेली का दिल और लिवर जेट की 12.20 बजे की फ्लाइट (9डब्ल्यू 792) से भेजा गया। इंदौर एयरपोर्ट के एयर ट्रैफिक कंट्रोल (एटीसी) ने नागपुर और दिल्ली एटीसी से संपर्क कर इमरजेंसी बताते हुए निर्धारित समय पर रूट क्लीयर रखने को कहा। प्रबंधन की कोशिश रही कि फ्लाइट कम से कम समय में पंहुचे। इसके लिए एटीसी ने डायरेक्ट रूट प्लान किया। उधर दिल्ली में भी फ्लाइट को लैंडिंग में भी प्राथमिकता दी गई। एटीसी अधिकारियों के अनुसार दिल्ली में फ्लाइट सामान्य समय से करीब 14 मिनट पहले लैंड हो गई। इमरजेंसी की स्थिति में ही रूट में ऐसे बदलाव किए जाते हैं।

रामगोपाल का दिल व लिवर चोइथराम से ले जाते डॉक्टर।

रामगोपाल

02 अक्टूबर को रात 9.45 बजे रामगोपाल को चोइथराम लाया गया

03 अक्टूबर को रात 9.50 बजे उसे दूसरी बार ब्रेन डेड घोषित किया गया

04 अक्टूबर सुबह 6.50 बजे सुबह एम्स के डॉक्टरों की टीम इंदौर पहुंची

03 घंटे में डॉक्टरों ने हार्ट, लिवर और किडनी निकाली

इंदौर से दिल्ली के लिए उड़ान भरने वाली फ्लाइट नागपुर रैंज से गुजरती है। जिस समय इंदौर की फ्लाइट को गुजरना था तब इस रैंज में भी एक फ्लाइट थी। नागपुर एटीसी ने इस फ्लाइट का भी रूट डायवर्ट कर दिल्ली जा रही फ्लाइट को सीधा रास्ता दे दिया।

14 मिनट पहले पहुंची फ्लाइट

ट्रांसप्लांटेशन के लिए ह्यूमन ऑर्गन इमरजेंसी के हालात में दूसरे शहर भिजवाए जाते हैं। फ्लाइट को दिल्ली लैंड करने में देरी न हो इसलिए एटीसी पूरे समय नागपुर और दिल्ली एयरपोर्ट के संपर्क में रही। नागपुर रैंज में और किसी फ्लाइट के नहीं आने से ऑर्गन ले जा रही फ्लाइट को सीधा रास्ता मिला। ये फ्लाइट सामान्य समय से करीब 14 मिनट पहले दिल्ली में लैंड हुई।

- **मनोज चंसोरिया,** एयरपोर्ट डायरेक्टर

बनाए गए दो कॉरिडोर

अंगदान के लिए दो कॉरिडोर बनाए गए। एक कॉरिडोर चोइथराम से एयरपोर्ट के लिए बनाया गया। इसमें सुबह 11.35 बजे चोइथराम से दिल व लिवर एयरपोर्ट पहुंचाए गए। वहीं दूसरा कॉरिडोर अस्पताल से ग्रेटर कैलाश अस्पताल तक के लिए बनाया गया। 12 बजे एक किडनी लेकर डॉक्टरों की टीम चोइथराम से निकली और ठीक 12.07 बजे ग्रेटर कैलाश हॉस्पिटल में पहुंची, जहां भर्ती सुषमा कटारे निवासी पत्रकार कॉलोनी को प्रत्यारोपित की गई। दूसरी किडनी चोइथराम अस्पताल में एक किडनी महिला को प्रत्यारोपित की गई।

मेरा बेटा आया दूसरों के काम

मैंने उसे आवाज लगाई, हिलाया, नाम से भी पुकारा लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। डॉक्टरों ने बताया कि उसकी सांसें चल रही है लेकिन दिमागी रूप से मौत हो चुकी है। मशीन हटा भी देते तो मौत हो ही जाती। पोस्टमार्टम करवाते तो एक भी अंग किसी के काम नहीं आता, इसलिए अंगदान करने का निर्णय लिया। आखिर मरने के बाद भी वह लोगों के काम आ गया।

- **सुखलाल,** ब्रेड डेड रामगोपाल के पिता

पहले भी थमा था शहर

7 अक्टूबर 2015 : सड़क दुर्घटना में जख्मी रामेश्वर खेड़े निवासी खरगोन को ब्रेन डेड घोषित करने के बाद उनका लिवर, किडनी, त्वचा और आंखें दान की गईं। लिवर मेदांता हॉस्पिटल गुड़गांव भेजा गया था।

8 नवंबर 2015 : ब्रेन हेमरेज के बाद रमेश असनानी निवासी पलसीकर कॉलोनी का लिवर, किडनी, त्वचा, नेत्रदान कर तीन जिंदगियां रोशन की गई थीं।

3 जनवरी 2016 : ब्रेन डेड सोनिया चौहान निवासी मालवीय नगर का दिल ...

... बार तीन शहरों में एक साथ 4 ग्रीन कॉरिडोर बनाए गए थे।

22 जनवरी 2016 : हादसे में घायल दर्शन निवासी ... नगर के ब्रेन डेड होने पर उनका लिवर दिल्ली भेजा गया था। किडनी शहर के अलग-अलग अस्पतालों में भर्ती मरीजों को लगाई गई थीं।

9 फरवरी 2016 : मस्तिष्क में रक्तस्राव के बाद महिदपुर के विश्वास डोसी का लिवर गुड़गांव व किडनी इंदौर के मरीजों को लगाई गई थी।

... डेड होने पर उनका दिल फोर्टिस हॉस्पिटल मुंबई, लिवर मेदांता गुड़गांव और किडनी इंदौर में ही मरीजों को लगाई गई।

7 मार्च 2016 : जाजमखेड़ी मनावर निवासी पप्पू के ब्रेन डेड होने पर उनका दिल और लिवर दिल्ली भेजे गए। किडनी, आंखें और त्वचा भी प्रत्यारोपित की गई।

10 मार्च 2016 : हादसे में घायल गौरव जैन के ब्रेन डेड होने पर उनका दिल और लिवर दिल्ली भेजे गए।

patrika Wed, 05 October 2016
epaper.patrika.com/c/13712611

अंगदान | ब्रेन डेड युवक की किडनियां शहर के ही दो अस्पतालों को दी, आंखें और स्किन भी दान की

एक साल के भीतर 10वीं बार बना ग्रीन कॉरिडोर, छठी बार दिल भेजा, दिल्ली में 45 वर्षीय व्यक्ति को लगाया

भास्कर संवाददाता | इंदौर

शहर में मंगलवार को फिर ग्रीन कॉरिडोर बना। एक साल में दसवीं बार। इस बार 30 वर्षीय ब्रेन डेड रामगोपाल का दिल, लिवर और किडनियां दान की गईं। दिल और लिवर दिल्ली एम्स भेजा और किडनियां शहर के ही दो अस्पतालों को दी गईं। आंखें और स्किन भी दान की गईं। यह छठी बार है, जब इंदौर से दिल फ्लाइट से दूसरे शहर भेजा गया और उसका सफल ट्रांसप्लांट हुआ। इससे पहले दिल दो बार मुंबई, तीन बार एम्स दिल्ली और एक बार गुड़गांव भेजा गया।

शेष | पेज 6 पर

पहला कॉरिडोर | चोइथराम अस्पताल से एयरपोर्ट तक सुबह 11.40 बजे बनाया गया। दोपहर 12.30 बजे की फ्लाइट से दिल और लिवर दिल्ली के एम्स भेजे गए। दिल वहां 45 वर्षीय व्यक्ति को प्रत्यारोपित किया गया है। वहीं लिवर संक्रमण के कारण प्रत्यारोपित नहीं हो सका।

दूसरा कॉरिडोर | चोइथराम अस्पताल से ग्रेटर कैलाश अस्पताल तक सुबह 11.52 बजे बना। किडनी 45 वर्षीय महिला को प्रत्यारोपित की गई। दूसरी किडनी चोइथराम में ही मरीज को प्रत्यारोपित की गई।

लिवर संक्रमण के कारण प्रत्यारोपित नहीं हुआ

दिल, किडनी, आंखें और स्किन का प्रत्यारोपण सफल रहा। संक्रमण के चलते लिवर ट्रांसप्लांट नहीं हो सका। युवक के शव को एम्बॉमिंग कर उप्र स्थित घर भिजवा दिया है। - **संजय दुबे,** कमिश्नर, इंदौर ऑर्गन सोसायटी अध्यक्ष

पिता बोले- पीएम में भी चीर-फाड़ होती, अच्छा है बेटे के अंग किसी के काम आए

रामलाल के पिता सुखलाल ने बताया कि मैं जब यहां आया तो बेटा बोल नहीं रहा था। कुछ कह रहे थे तो सुन भी नहीं रहा था। पलकें भी नहीं झपका रहा था। मुझे डॉक्टरों ने अंगदान के बारे में बताया। उसका पोस्टमॉर्टम होता तब भी चीर-फाड़ होती। इससे अच्छा है कि उसके अंग किसी की जिंदगी बचाने के काम आएं।

» बने दो ग्रीन कॉरिडोर » लिवर दिल्ली और किडनी इंदौर में हुईं ट्रांसप्लांट » सनावद के 30 वर्षीय ब्रेनडेड युवक के अंगदान

पिता बोले- इससे तो अच्छा है किसी को नई जिंदगी मिले

तीन लोगों को मिला नया जीवन

दबंग रिपोर्टर ✡ इंदौर

जब बेटा ही नहीं रहा तो पोस्टमॉर्टम के बाद उसके शरीर में क्या बचेगा। इससे बेहतर यही होगा कि उसके अंगदान कर किसी का जीवन बचा लिया जाए। जवान बेटे की असमय मौत से आहत एक पिता द्वारा ऐनवक्त पर लिए गए इस निर्णय ने एक साथ तीन लोगों का जीवन बचा लिया।

इसके लिए मंगलवार को शहर में फिर चोइथराम अस्पताल से एअरपोर्ट व ग्रेटर कैलाश नर्सिंग होम के बीच दो ग्रीन कॉरिडोर बने। इसमें सड़क दुर्घटना के बाद ब्रेनडेड घोषित 30 वर्षीय युवक का लिवर दिल्ली के एम्स भेजा गया, जबकि किडनी इंदौर में ही ट्रांसप्लांट हुई। वहीं आंखें एमके इंटरनेशनल आई बैंक और स्किन चोइथराम अस्पताल के स्किन बैंक में भेजी गई।

रामगोपाल तेली

उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले का मूल निवासी रामगोपाल तेली सनावद में रहकर गमले बनाने का काम करता था। गत दिनों मोरटक्का पुल पर दुर्घटना में घायल होने पर चोइथराम अस्पताल में उसका इलाज चल रहा था। इस बीच रविवार को हालत बिगड़ी और ब्रेन ने काम करना बंद कर दिया। सोमवार शाम पिता सुखलाल उप्र से आए, तब मुस्कान ग्रुप ने उन्हें रामगोपाल की स्थिति से अवगत कराते हुए अंगदान करने के लिए प्रेरित किया।

एक के बाद एक पूरी होती गई प्रक्रिया

उनकी सहमति मिलने के बाद रात करीब 9.30 से 12 बजे के बीच दो बार डॉक्टरों की टीम द्वारा रामगोपाल को ब्रेनडेड घोषित किया गया। पांच बजे तमाम जांचें और अन्य औपचारिकताएं पूरी करने की प्रक्रिया शुरू हुई। इसी बीच सुबह 6.50 बजे डॉ. मिलिंद होटे और सुजॉय पाल के नेतृत्व में एम्स के चार डॉक्टरों की टीम इंदौर आई। उन्होंने चोइथराम अस्पताल के डॉ. चमन्या, प्रदीप सालगिया, रतन सहजपाल के साथ आर्गन हार्वेस्टिंग की प्रक्रिया शुरू की।

एअरपोर्ट की दूरी प्रति किमी एक मिनट में तय

लिवर एअरपोर्ट के अंदर ले जाते कर्मचारी

लिवर निकालने के बाद डॉक्टरों ने विशेष केमिकल और आइस में रखकर चोइथराम अस्पताल से 11.40 बजे विशेष एम्बुलेंस में एअरपोर्ट के लिए रवाना किया। एअरपोर्ट तक 10.4 किमी का सफर कलेक्टोरेट, महूनाका, बड़ा गणपति होते हुए ग्रीन कॉरिडोर से मात्र 11 मिनट में पूरा हो गया। यानी एक मिनट में एक किलोमीटर। इसके बाद दूसरे बॉक्स में किडनी बीआरटीएस के रास्ते ग्रेटर कैलाश नर्सिंग होम पहुंचाई गई।

एम्स के डॉक्टर ट्रैफिक में उलझे

11.40 बजे लिवर का बॉक्स गाड़ी में रखते ही किसी ने ट्रैफिक डीएसपी की गाड़ी को रवाना कर दिया। यह देख विशेष एंबुलेंस के ड्राइवर ने भी गाड़ी बढ़ा दी। दोनों गाड़ियां तो आगे निकल गईं, लेकिन एम्स के डॉक्टरों की टीम ट्रैफिक में उलझ गई, जिसके चलते लिवर पहुंचने के करीब दस मिनट बाद डॉक्टरों की गाड़ी वहां पहुंची। 12.20 की फ्लाइट के लिए मुस्कान ग्रुप के सेवादारों ने पहले ही डॉक्टरों का चेक इन कर लिया था।

हाथोहाथ ट्रांसप्लांट हो गई दोनों किडनी

रामगोपाल की एक किडनी चोइथराम अस्पताल में ही भर्ती खरगोन के एक व्यक्ति को लगाई गई। डॉक्टरों के मुताबिक किडनी की बीमारी से पीड़ित यह व्यक्ति कई वर्षों से डायलेसिस पर चल रहा था। करीब तीन घंटे तक ये सर्जरी चली। वहीं दूसरी किडनी ग्रेटर कैलाश में 29 वर्षीय युवती को ट्रांसप्लांट की गई।

मुस्कान ग्रुप ने संभाली बागडोर

रामगोपाल को ब्रेनडेड घोषित करने के बाद उप्र के ग्रामीण इलाके से आए उसके पिता को अंगदान के लिए राजी करना आसान नहीं था। मुस्कान ग्रुप के सेवादार संदीपन आर्य, जीतू बगानी, नरेश फुंदवानी, जयश्री विरानी व तरूणा बजाज ने तमाम उदाहरण देकर उन्हें बेटे के अंगदान के लिए राजी किया जा सका।

एक साल में दसवां ग्रीन कॉरिडोर

खरगोन के बलवाड़ी में रहने वाले रामेश्वर खेड़े के अंगों के लिए पहली बार 7 अक्टूबर 2015 को ग्रीन कॉरिडोर बना था। इस दौरान लिवर और किडनी के साथ ही हार्ट भी दिल्ली व मुंबई भेजे गए। मंगलवार को यह दसवां ग्रीन कॉरिडोर बना।

अब तक हुए अंगदान के मामले एक नजर में

7 अक्टूबर 2015	रामेश्वर खेड़े
8 नवंबर 2015	रमेश असनानी
3 जनवरी 2016	सोनिया मालवीय
22 जनवरी 2016	दर्शन गुर्जर
9 फरवरी 2016	विश्वास डोसी
5 मार्च 2016	दुर्गेश मालवीय
7 मार्च 2016	पप्पू
10 मार्च 2016	गौरव जैन
28 अप्रैल 2016	दीपक धनेता

दिलो पर राज करने वाले दिल की धड़कन दे गए

- इंदौर के निवासी ४५ वर्षीय स्वर्गीय श्री सुनील पेरुलीया जी एक कर्मठ एवं मिलनसार व्यवसायी थे,उनका मानना था की सब कुछ इंसान अपने सदकर्मो से ही हासिल कर सकता है एवं वे अपने बच्चो को भी यही सीखना चाहते थे ।
- उनके बेटे ने अपने प्रिय पिता की सीख पर अमल करते हुए ही उनके दिल, लीवर, किडनियों, त्वचा और कार्निया दान कर किसी और को जीवन देकर उन्हें पुनर्जीवित कर दिया ।
- वे सामाजिक के साथ-साथ राजनितिक कार्यो में भी रूचि रखते थे।
- वे मानते थे की देश को सही दिशा देने के लिए जितना सामाजिक कार्य करना जरुरी है उतना ही राजनीती में भी सक्रिय रहना आवश्यक है ।

इंदौर का सितारा हुआ दैदिव्यमान

एक्सीडेंट के बाद ब्रेन डेड सुनील का दिल मुंबई, लिवर दिल्ली व किडनी शहर के दो पेशेंट को ट्रांसप्लांट की गईं

भास्कर संवाददाता | इंदौर

बड़ी ग्वालटोली के 45 वर्षीय सुनील परूलिया का दिल फोर्टिस हॉस्पिटल मुंबई, लिवर एम्स दिल्ली भेजा गया, लेकिन वहां किसी पेशेंट से ब्लड ग्रुप, टिश्यू मैच नहीं होने पर वहीं के आईएलबीएस अस्पताल को दिया। दिल मुंबई में 45 वर्षीय व्यक्ति को ट्रांसप्लांट किया गया। किडनियां शहर के ही दो अस्पतालों में दी।

एक साथ बने तीन ग्रीन कॉरिडोर

- **पहला** ग्रीन कॉरिडोर चोइथराम अस्पताल से 11.15 बजे एयरपोर्ट के लिए बनायाा। 11.25 बजे दिल एयरपोर्ट पहुंचा। चार्टर्ड प्लेन से उसे 11.29 बजे रवाना किया। दोपहर 12.29 बजे विमान मुंबई एयरपोर्ट पहुंचा। 17 मिनट में एयरपोर्ट से फोर्टिस हॉस्पिटल पहुंचा। शाम 4 बजे इसे प्रत्यारोपित किया गया।
- **दूसरा** कॉरिडोर चोइथराम से एयरपोर्ट के लिए 11.45 बजे बना। अस्पताल से 12 मिनट में 11.57 बजे लिवर एयरपोर्ट पहुंचा। वहां से प्लेन से इसे दिल्ली भेजा गया।
- **तीसरा** कॉरिडोर चोइथराम से बॉम्बे अस्पताल तक बना। वहां एक किडनी भेजी, जिसे बड़वाह की महिला को लगाई। दूसरी किडनी चोइथराम में ही रतलाम के व्यक्ति को प्रत्यारोपित की।

चार लोगों को दे गया नई जिंदगी

सुनील का पीपल्याहाना के समीप 3 नवंबर को एक्सीडेंट हो गया था। इससे वह कोमा में चले गए थे। तीन दिन तक उनका सुयश अस्पताल में इलाज चला, लेकिन ठीक नहीं हुए। इसके बाद उनके परिजन ने अंगदान करने का निर्णय लिया। सुनील एक साथ चार लोगों को नई जिंदगी दे गया। परिजन की सहमति के बाद इंदौर ऑर्गन डोनेशन सोसायटी ने अंगदान की प्रक्रिया की। मुस्कान ग्रुप के सेवादार जीतू बगानी, नरेश फुंदवानी ने बताया कि सोमवार रात को ही आईसीयू सपोर्ट वाली एम्बुलेंस में सुनील को सुयश अस्पताल से चोइथराम शिफ्ट किया गया।

इदार न रच दिया इतहास, 11वीं बार ग्रीन कॉरिडोर

इंदौर। नगर प्रतिनिधि

अंगदान में एक बार फिर इंदौर का नाम शीर्ष पर पहुंच गया है। मंगलवार को 11वीं बार ग्रीन कॉरिडोर बना। दिल मुंबई में धड़केगा, लेकिन लिवर एम्स दिल्ली की बजाय आईएलबीएस (इंस्टीट्यूट ऑफ लिवर एंड बिलियरी सर्विसेस) भेजना पड़ा। किडनियां इंदौर के अस्पतालों में मरीजों को ट्रांसप्लांट हुई।

सुनील परूलिया

सोमवार देर रात ग्वालटोली निवासी 45 वर्षीय सुनील परूलिया को ब्रेन डेड घोषित किया गया था। उनका 3 नवंबर को मूसाखेड़ी क्षेत्र में एक्सीडेंट हो गया था। तभी से वे सुयश अस्पताल में भर्ती थे। सोमवार को ब्रेन डेड कमेटी के डॉक्टरों ने उन्हें ब्रेन डेड घोषित किया। इसके बाद परिजन ने मुस्कान ग्रुप के सहयोग से बॉडी को देर रात पौने 2 बजे चोइथराम अस्पताल शिफ्ट किया। यहां चोइथराम अस्पताल के डॉ. विनीत गौतम, दिल्ली एम्स के डॉ. सुजाय पॉल की टीम ने लिवर निकाला। डॉ. सुनील खुबे ने फोर्टिस के विशेषज्ञ डॉ. अनन्य मूले और एनेस्थिसिया विशेषज्ञ डॉ. नितिन शर्मा के साथ मिलकर हार्ट निकाला। हार्ट व लिवर दोनों सुबह ठीक 11.15 बजे चोइथराम अस्पताल से निकला, 11.25 पर एयरपोर्ट पहुंचा। दूसरा ग्रीन कॉरिडोर चोइथराम से बांबे अस्पताल तक बना जहां किडनी भेजी गई।

बेटा बोला– मेरे पापा कई लोगों में रहेंगे जिंदा

अंग दानदाता सुनील के बेटे मनीष ने कहा कि हमने अंगदान के बारे सुना था लेकिन यह नहीं पता था कि कभी हमारे ही परिवार में ऐसा होगा। पिता के जाने का दुख तो कभी कम नहीं होगा लेकिन इस बात की खुशी है कि वे कई लोगों के शरीर में जिंदा रहेंगे। पत्नी कांता ने सुयश अस्पताल में ही पति को आखरी विदाई दे दी थी। वह चोइथराम अस्पताल नहीं पहुंचीं। उल्लेखनीय है कि इंदौर में अक्टूबर 2015 में सबसे पहले खरगोन के ब्रेन डेड रामेश्वर खेड़े के अंगदान हुए थे। इसके बाद से अब तक 11 ग्रीन कॉरिडोर बन चुके हैं।

योजना के मुताबिक लिवर एम्स भेजना था लेकिन दानदाता और रेसिपिएंट के टिशू मैचिंग में कुछ समस्या आने पर अचानक इसे कैंसिल कर दूसरा रेसिपिएंट तलाशा गया। आईएलबीएस में 58 वर्षीय पुरुष को लिवर ट्रांसप्लांट हुआ। वे लंबे समय से क्रॉनिक लिवर डिसीज से परेशान थे। वहीं हार्ट फोर्टिस मुंबई में 47 वर्षीय हनीफ सईद को लगा। हनीफ पेशे से ड्राइवर हैं और लंबे समय से दिल की बीमारी से परेशान थे। उधर एक किडनी चोइथराम में रतलाम निवासी 52 वर्षीय पारसमल को लगी, जबकि दूसरी बांबे हॉस्पिटल में 52 वर्षीय बड़वाह निवासी सरिता बर्वे को लगाई गई।

11वां ग्रीन कॉरिडोर; इंदौर से 7वीं बार दिल बाहर भेजा गया, मुंबई में ट्रांसप्लांट हुआ

भास्कर संवाददाता | इंदौर. शहर में मंगलवार को 11वीं बार ग्रीन कॉरिडोर बना। सातवीं बार दिल दूसरे शहर भेजा गया। बड़ी ग्वालटोली के 45 वर्षीय सुनील परूलिया का दिल फोर्टिस अस्पताल मुंबई में 45 वर्षीय व्यक्ति को ट्रांसप्लांट किया गया। लिवर दिल्ली भेजा गया और किडनियां शहर के ही दो अस्पतालों में एक महिला और पुरुष को प्रत्यारोपित की गईं। सुनील का 3 नवंबर को एक्सीडेंट हो गया था, जिससे वह कोमा में चले गए थे। ब्रेन डेड के बाद उनके अंगदान किए गए। पिछले साल अक्टूबर से अंगदान के लिए शहर में 10 बार ग्रीन कॉरिडोर बन चुके हैं और छह बार दिल बाहर भेजा गया है।

पेज|5 भी पढ़ें

अशोक कर गए मुक्त कई परिवारों का शोक

- रजिस्ट्रार फर्म्स व सोसाइटी में ऑडिटर के पद पर कार्य करते हुए उन्होंने सदैव कर्तव्य निष्ठ व लग्नशील होने का मार्ग प्रशस्त किया ।
- वे अपने जीवन काल में परिवार व समाज में नम्र स्वभाव व निष्काम जीवन के कारण सर्व प्रिय रहे ।
- उनके परिवार ने उनकी किडनियां, लीवर, कार्निया और त्वचा दान कर उनके त्यागप्रिय जीवन को साकार कर दिया।
- वे व्यक्ति के विकास में ज्ञान के स्थान को सर्वश्रेष्ठ मानते थे तथा ये कहते थे की ज्ञान जिंदगी भर जहाँ सेभी मिले बटोरते रहना चाहिए ।
- वे परिवार को सदैव एकजुट होकर रहने तथा सभी की सहायता करने के लिए प्रेरित करते थे एवं जाते जाते भी प्रेरणा को यथार्थ कर गए ।

त्यागप्रिय जीवन को किया साकार

रिटायर्ड अधिकारी का लिवर व दोनों किडनी दान, विदाई में सौ लोगों का परिवार पहुंचा

आठ दिन में दूसरी बार, तेरह महीने में बारहवीं बार बना ग्रीन कॉरिडोर

बॉम्बे अस्पताल से एयरपोर्ट तक 19 किलोमीटर का सफर 15 मिनट में तय किया

इंदौर। नगर प्रतिनिधि

अंगदान करने में शहर ने एक बार फिर मिसाल कायम की। मंगलवार को ग्रीन कॉरिडोर बनाकर रिटायर्ड अधिकारी का लिवर मुंबई के कोकिला बेन अस्पताल भेजा गया, जबकि दिल काम नहीं आ सका। दोनों किडनी शहर के ही दो अस्पतालों में ट्रांसप्लांट की गईं। अंगदान के लिए शहर में आठ दिन में दूसरी बार और तेरह महीने में बारहवीं बार ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया।

उज्जैन निवासी 61 वर्षीय अशोक जैन को ब्रेन हेमरेज के कारण बॉम्बे अस्पताल में भर्ती कराया गया था। सुबह उन्हें ब्रेन डेड घोषित कर दिया गया। परिजन ने मुस्कान ग्रुप के माध्यम से अंगदान की इच्छा जाहिर की। ऑर्गन डोनेशन सोसायटी ने ताबड़तोड़ जरूरतमंद मरीजों की लिस्ट खंगाली।

शाम 6.30 बजे बॉम्बे हॉस्पिटल से एयरपोर्ट तक ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया। ठीक 15 मिनट यानी 6.45 बजे लिवर एयरपोर्ट पहुंचा। इसके बाद एक किडनी चोइथराम अस्पताल भेजी गई, जबकि दूसरी किडनी बॉम्बे अस्पताल में ही मरीज को ट्रांसप्लांट की गई। 8 नवंबर को चोइथराम अस्पताल से ग्वालटोली निवासी सुनील पेरूलिया का अंगदान हुआ था।

रजिस्ट्रार फर्म्स एंड सोसायटी में थे ऑडिटर

अंगदानदाता अशोक जैन रजिस्ट्रार फर्म्स एंड सोसायटी में ऑडिटर के पद से रिटायर्ड हुए थे। उनके अंतिम क्षणों में अस्पताल में अंगों को विदाई देने के लिए 100 लोगों का परिवार मौजूद था। पत्नी शोभा जैन, बेटा अंकुश व बेटी आशिता लिवर को छोड़ने के लिए एयरपोर्ट तक गईं। वहां लिवर के बॉक्स को सीने से लगाकर अंतिम विदाई दी गई। ऐसा पहली बार हुआ जब दानदाता के परिवार के सदस्य ग्रीन कॉरिडोर में अंग छोड़ने एयरपोर्ट तक गए।

बॉम्बे हॉस्पिटल से ग्रीन कॉरिडोर बनाकर अशोक जैन का लिवर मुंबई भेजा गया।

62 साल की महिला को लगा लिवर

जैन का लिवर मुंबई निवासी 62 वर्षीय महिला को ट्रांसप्लांट किया गया। महिला लिवर संक्रमण से पीड़ित थी। बीमारी अंतिम स्थिति में पहुंच चुकी थी। उधर एक किडनी चोइथराम अस्पताल में आष्टा की 30 वर्षीय महिला शिखा व दूसरी किडनी बॉम्बे अस्पताल में होशंगाबाद की 32 साल की महिला उमा को ट्रांसप्लांट की गई।

दूसरे ग्रीन कॉरिडोर के तालमेल में हुई गड़बड़ी

किडनी ले जाने के लिए बने दूसरे ग्रीन कॉरिडोर में तालमेल की कमी नजर आई। डॉक्टर किडनी चोइथराम अस्पताल ले जाने के लिए नीचे पहुंचे, लेकिन ट्रैफिक पुलिस अलर्ट नहीं थी। डॉक्टर कुछ सेकंड किडनी लेकर खड़े रहे। इसके बाद हड़बड़ाहट में एंबुलेंस में रखी गई और इसके पीछे-पीछे ट्रैफिक पुलिस की गाड़ी गई। इस बीच ट्रैफिक की समस्या का सामना करना पड़ा। हालांकि किडनी रिट्रायवल के बाद भी काफी देर तक अच्छी रहती है, इसलिए उसमें कोई परेशानी नहीं आई, लेकिन प्रशासनिक तालमेल के लिहाज से व्यवस्था गड़बड़ा गई।

पहली बार शाम को बना ग्रीन कॉरिडोर, पहली मर्तबा ही ऑर्गन लेकर एयरपोर्ट पहुंचे परिजन

ब्रेन डेड मरीज के अंगदान से तीन लोगों को मिली नई जिंदगी

भास्कर संवाददाता | इंदौर

अंगदान के लिए शहर में 12वीं मर्तबा बने ग्रीन कॉरिडोर में दो बातें पहली बार हुईं। पहली- अंगदाता परिवार भी एयरपोर्ट तक अंगों के साथ गया। पिता के लिवर के साथ बेटी अंशिता और बेटा अंशुल एम्बुलेंस में अस्पताल से एयरपोर्ट तक गए। लिवर को मुंबई भेजा गया। दूसरी बात- इस बार शाम को ग्रीन कॉरिडोर बनाया, जबकि पहले 11 बार सुबह के समय ऐसा हुआ था। शाम को ट्रैफिक ज्यादा रहने से वाहनों को पांच मिनट पहले ही रोक दिया था। इससे अस्पताल से एयरपोर्ट तक 22 किमी की दूरी एम्बुलेंस ने 15 मिनट में तय की।

उज्जैन निवासी 61 वर्षीय अशोक जैन को ब्रेन हेमरेज के कारण परिजन बॉम्बे हॉस्पिटल ले गए थे। उन्हें तीन दिन पहले डिस्चार्ज कर दिया था। परिजन उन्हें घर ले गए लेकिन फिर तबीयत बिगड़ी तो दोबारा यहां अस्पताल में भर्ती करवाया। डॉक्टरों ने परिजन को मरीज की ब्रेन डेड के बारे में बताया। बाद में अंगदान के लिए परिजन ने मुस्कान ग्रुप से मिले और फिर सारी प्रक्रिया हुई। मुस्कान ग्रुप के जीतू बगानी, संदीपन आर्य, नरेश फुंदवानी का सहयोग रहा।

पिता के लिवर को सहेजकर ले गए बेटा-बेटी

पिता अशोक जैन के लिवर के साथ बेटी और बेटा एम्बुलेंस में अस्पताल से एयरपोर्ट तक गए।

32-32 साल की दो महिलाओं को किडनियां की गईं ट्रांसप्लांट

एक किडनी बॉम्बे हॉस्पिटल में ही होशंगाबाद निवासी 32 साल की महिला को ट्रांसप्लांट की गई, जबकि दूसरी चोइथराम में भर्ती सीहोर की महिला को। दोनों अस्पतालों के बीच शाम 6.45 बजे ग्रीन कॉरिडोर बना।

40% ही काम कर रहा था दिल, इसलिए नहीं हो सका दान

इंदौर ऑर्गन डोनेशन सोसायटी ने कोशिश की थी कि जैन का दिल भी किसी के काम आ जाए लेकिन वह केवल 40 प्रतिशत ही धड़क रहा था। इसलिए उसका दान संभव नहीं हो सका।

मुंबई के डीकेबीए अस्पताल में भेजा गया लिवर, किडनी इंदौर में हुई ट्रांसप्लांट

दो ग्रीन कॉरिडोर बनाकर दी तीन लोगों को नई जिंदगी

दबंग रिपोर्टर ◆ इंदौर

दो कॉरिडोर बनाकर तीन लोगों को नई जिंदगी देने के लिए मंगलवार शाम शहर में 12वां ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया। बॉम्बे अस्पताल से एअरपोर्ट और चोइथराम अस्पताल के बीच बने दो कॉरिडोर से उज्जैन निवासी 61 वर्षीय अशोक जैन का लिवर मुंबई के धीरूभाई कोकिला बेन अंबानी अस्पताल में भेजा गया, जबकि एक किडनी बॉम्बे अस्पताल और दूसरी चोइथराम अस्पताल में भर्ती मरीज को ट्रांसप्लांट की गई।

अशोक जैन

डॉक्टरों के मुताबिक ब्रेन हेमरेज के बाद जैन का इलाज चल रहा था। इलाज के दौरान ही उनके ब्रेन ने काम करना बंद दिया फिर मंगलवार को डॉक्टरों ने उन्हें ब्रेनडेथ घोषित कर दिया। जैन के परिजन संजय कासलीवाल व मुस्कान ग्रुप के सदस्यों की समझाइश पर परिजन ने ऑर्गन डोनेशन की सहमति दी, और डॉक्टरों ने टीम ने आगे की प्रक्रिया शुरू की, तो लिवर मुंबई के अस्पताल में भर्ती मरीज के लिए मैच कर गया, जबकि हार्ट अन्य कारणों से उपयोग में नहीं लिया जा सका। ऑर्गन हार्वेस्टिंग की प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी। प्रक्रिया चल ही रही थी कि लिवर लेने के लिए शाम को धीरूभाई कोकिला बेन अंबानी अस्पताल के डॉ. आशुतोष चौहान तीन डॉक्टरों की टीम के साथ इंदौर पहुंचे। पिछले एक साल में ये 12वां मौका है, जब अन्य लोगों को नई जिंदगी देने के लिए ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया।

परिजन ने एअरपोर्ट तक पहुंचाया लिवर। किडनी चोइथराम हॉस्पिटल व बॉम्बे हॉस्पिटल में भर्ती मरीजों को ट्रांसप्लांट की गई।

विशेष एम्बुलेंस से रवाना किए ऑर्गन

लिवर निकालने के बाद डॉक्टरों ने विशेष केमिकल और आइस के साथ एक बॉक्स में रखा था। इसके बाद डॉक्टरों की टीम एक विशेष एम्बुलेंस से लिवर को लेकर सुपर कॉरिडोर के रास्ते एअरपोर्ट के लिए रवाना हुई। जबकि दूसरा कॉरिडोर बीआरटीएस से चोइथराम अस्पताल के बीच बनाकर किडनी भेजी गई।

मुस्कान ग्रुप ने संभाली बागडोर

मंगलवार दोपहर से ही मुस्कान ग्रुप के सेवादारों ने सारी बागडोर अपने हाथों में ली, जो ऑर्गन को रवाना करने तक जारी रही। जिसमें संदीपन आर्य के साथ ही जीतू बगानी, नरेश फुंदवानी, जयश्री विरानी, राकेश ठाकुरिया सहित करीब एक दर्जन से ज्यादा सेवादार अस्पताल के अंदर और बाहर व्यवस्थाएं संभाले हुए थे।

बेटी ने एअरपोर्ट के अंदर तक पहुंचाया लिवर

पहली बार कॉरिडोर के दौरान पूरे समय किसी व्यक्ति के परिजन मौजूद रहे। स्व. जैन की बेटी अर्षिता, बेटा अंकुश के साथ ही पत्नी और भानजी बॉम्बे अस्पताल से एअरपोर्ट तक साथ पहुंचे। वहां से बेटी और बेटे ने ट्रॉली को अपने हाथों से धकेलते हुए टर्मिनल तक पहुंचाया। परिजनों के मुताबिक जैन सहकारिता विभाग में ऑडिटर के पद से करीब दो साल पहले ही सेवानिवृत्त हुए थे।

18 किमी का सफर 11 मिनट में

मंगलवार को बना ग्रीन कॉरिडोर अभी तक का सबसे बड़ा कॉरिडोर था। 18 किमी लंबे इस कॉरिडोर का सफर 11 मिनट में पूरा हुआ।

कर्मो के धनी ने किया महादान

- स्वर्गीय श्री सुनील जी किराने की दुकान पर कार्य किया करते थे व बहुत ईमानदार व कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति थे।

- नर सेवा ही नारायण सेवा है ऐसी विचारधारा के धनी स्वर्गीय श्री सुनील देवकर जी अपने संयुक्त परिवार का भरण पोषण सह्रदयता से करते थे।

- अपनी माँ से अत्यधिक स्नेह करते थे कहते थे ये जीवन उन्ही की तो देन है माँ का ऋण चुकाना मुश्किल है और वे स्वयं कई लोगो को जीवन देकर ऋणh कर गए।

- वे अल्प शिक्षित होने के उपरांत भी समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने हेतु सदैव स्वर्णिम अवसर खोजते रहते थे एवं अंगदान कर वे अविस्मरणीय कार्य कर गए।

होकर स्वयं अस्त कर गए जीवन की राहें प्रशस्त

प्रदेश का पहला लिवर ट्रांसप्लांट भोपाल में हुआ

शहर में 11 दिन में तीसरी बार बना ग्रीन कॉरिडोर

ब्रेन डेड मरीज का लिवर निजी अस्पताल से एयरपोर्ट ले जाने से पहले मृतक की बहन ,छोटा भाई और परिजनों ने हाथ जोड़कर विदाई दी। फोटो : विनय वर्मा

भास्कर संवाददाता | इंदौर

अंगदान को लेकर इंदौर फिर मिसाल बना। यहां से 42 साल के ब्रेन डेड मरीज का लिवर शुक्रवार को प्लेन से भोपाल भेजा गया, जिसे वहां के सिद्धांता रेडक्रॉस हॉस्पिटल में दूसरे व्यक्ति को ट्रांसप्लांट किया गया। यह प्रदेश का पहला लिवर ट्रांसप्लांट है। लिवर पहले गुरुवार को भेजा जाना था, लेकिन हार्ट चेन्नई के फोर्टिस अस्पताल को देने का फैसला देर शाम हो सका। इसके कारण ऑपरेशन टाल दिया गया। फिर भी हार्ट नहीं भिजवाया जा सका। मरीज की दोनों किडनियां यहीं के दो निजी अस्पतालों में भर्ती मरीजों को दी गईं। इसी के साथ शहर में 13 महीने में 13वीं बार ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया। 11 दिन में ही तीसरी बार ऐसा हुआ।

बुरहानपुर निवासी सुनील विट्ठल देवकर को ब्रेन हेमरेज के कारण एमवाय अस्पताल में भर्ती किया था। बुधवार रात ब्रेन डेड घोषित होने के बाद परिजनों ने अंगदान की इच्छा जताई। इसके बाद देवकर को इंदौर ऑर्गन डोनेशन सोसायटी और मुस्कान ग्रुप के सेवादार संदीपन आर्य व जीतू बगानी के सहयोग से रात 3.10 बजे सीएचएल अस्पताल शिफ्ट किया था। सोसायटी ने रीजनल ऑर्गन टिशू एंड ट्रांसप्लांट ऑर्गेनाइजेशन (रोटो) को सूचना दी। वहां से बताया गया कि लिवर के लिए वेटिंग में भोपाल के अस्पताल का नाम है। इसके बाद लिवर उक्त अस्पताल को देना तय किया। हालांकि सोसायटी ने शर्त रखी कि प्रदेश में पहली बार लिवर प्रत्यारोपण होने जा रहा है। इसलिए कोई जोखिम नहीं लिया जाए। विशेषज्ञ से ही ऑपरेशन करवाया जाए। इसके बाद अस्पताल प्रबंधन ने दिल्ली से डॉक्टरों को बुलाकर लिवर का ट्रांसप्लांट करवाया।

एक अस्पताल से दूसरे के लिए भी बना ग्रीन कॉरिडोर

इसके बाद संभागायुक्त संजय दुबे ने एयर टैक्सी से लिवर भोपाल भेजने की व्यवस्था करवाई। शुक्रवार सुबह 5.55 बजे सीएचएल अस्पताल से एयरपोर्ट तक ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया। लिवर लेकर एम्बुलेंस करीब 6.11 बजे एयरपोर्ट पहुंची। एयर टैक्सी से लिवर भोपाल भेजा गया। मरीज की एक किडनी सीएचएल और दूसरी चोइथराम अस्पताल में मरीज को दी गई। सीएचएल से किडनी चोइथराम अस्पताल भेजने के लिए भी सुबह 6.15 बजे एक ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया। मुस्कान के सेवादार नरेश फुंदवानी ने बताया कि एम्बुलेंस तय समय पर वहां पहुंची।

प्रदेश में पहली बार ट्रांसप्लांट होगा लिवर, इंदौर से जाएगा भोपाल

बुरहानपुर के किराना दुकानदार के अंग होंगे दान

शहर में दस दिन में तीसरी बार बनेगा ग्रीन कॉरिडोर

इंदौर। नप्र

शुक्रवार सुबह जब आप अखबार पढ़ रहे होंगे, तब शहर के साथ-साथ प्रदेश अंगदान और लिवर ट्रांसप्लांट के मामले में नया कीर्तिमान बना रहा होगा। प्रदेश में पहली बार भोपाल में लिवर ट्रांसप्लांट किया जाएगा, जो इंदौर से भेजा जाएगा। सुबह 4.30 बजे शहर में दो ग्रीन कॉरिडोर बनाए जाएंगे। पहला भोपाल के लिए एमआईजी स्थित सीएचएल अस्पताल से एयरपोर्ट और दूसरा इसी अस्पताल से चोइथराम अस्पताल के लिए बनेगा। बुरहानपुर निवासी किराना व्यवसायी 42 वर्षीय सुनील देवकर ब्रेन हेमरेज के बाद से एमवाय अस्पताल में भर्ती थे। गुरुवार को उन्हें ब्रेनडेड घोषित कर दिया गया। परिवार ने मुस्कान ग्रुप के सहयोग से उन्हें सीएचएल अस्पताल में शिफ्ट किया। -शेष पेज 3 पर

प्रदेश में पहला लिवर ट्रांसप्लांट; आज 13वीं बार बनेगा ग्रीन कॉरिडोर, भोपाल भेजा जाएगा

भास्कर संवाददाता | इंदौर

सुनील देवकर

अंगदान के लिए शहर में शुक्रवार सुबह 13वीं बार ग्रीन कॉरिडोर बनेगा। बुरहानपुर के ब्रेन डेड मरीज का लिवर भोपाल के हॉस्पिटल भेजा जाएगा, जबकि उनकी दोनों किडनियां शहर के ही दो निजी अस्पतालों में दी जाएंगी। प्रदेश में पहली बार लिवर का ट्रांसप्लांट किया जाएगा।

बुरहानपुर के 42 वर्षीय सुनील विट्ठल देवकर को ब्रेन हेमरेज के कारण एमवाय अस्पताल में भर्ती किया था। डॉक्टर ने मरीज के परिवार को ब्रेन डेथ के बारे में बताया। इसके बाद परिवार के सतीश दीवानकर व सुनील नागपुरे ने मुस्कान के सेवादार संदीपन आर्य व जीतू बगानी से संपर्क कर अंगदान की इच्छा जताई। ड्यूटी सीएमओ ने रात 11 बजे इंदौर ऑर्गन डोनेशन सोसायटी के सचिव डॉ. संजय दीक्षित को सूचना दी। इसके बाद ब्रेन डेथ सर्टिफिकेशन की प्रक्रिया शुरू हुई। संक्रमण की आशंका में रात 3.10 बजे मरीज को सीएचएल अस्पताल शिफ्ट किया गया। सोसायटी ने रीजनल ऑर्गन टिशू एंड ट्रांसप्लांट ऑर्गेनाइजेशन (रोटो) को सूचना दी। वहां से बताया गया कि लिवर के लिए वेटिंग लिस्ट में भोपाल के सिद्धांता रेडक्रॉस हॉस्पिटल का नाम है। इस पर लिवर उसे देना तय किया गया।

बुझते हुए चिराग से रोशन हुआ जीवन

- शुभम मेधावी छात्र था व उसका सपना न्यूरोसर्जन बनने का था तथा उसके परिजन अल्पशिक्षित होकर भी उसे उच्च शिक्षा दिलाना चाहते थे ।
- वह डॉक्टर बनकर गरीबो को मुफ्त चिकित्सा सेवा करना तथा अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनाना चाहता था।
- उसका मानना था की भगवान सबको दुसरो की मदद करने का मौका देता है और अल्पायु में ही अंगदान के रूप में जीवन दान कर महादानी बन गया।
- कोई भी कार्य कठिन या सरल नहीं होता बस दृढ़निश्चय ही सफलता की कुंजी है, इन विचारो को मानने वाले शुभम खुद को सफल व्यक्ति बनाकर समाज के सामने उदाहरण प्रस्तुत करना चाहता था और अंगदान कर उदाहरण बन गया।

जिंदादिली से जिंदगी दे गए

■ लिवर और हार्ट नहीं हो सका ट्रांसप्लांट ■ 17 मिनट में अरबिंदो से चोइथराम अस्पताल पहुंचाया ऑर्गन

किडनी के लिए बना कॉरिडोर, दिल को नहीं मिली फ्लाइट

दबंग रिपोर्टर ▸ इंदौर

यह 14वां मौका था, जब शनिवार तड़के इंदौर में फिर एक बार कैडेवर ऑर्गन डोनेशन के लिए ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया। बागली के गांव छतरपुरा के 18 वर्षीय शुभम अटारिया की ब्रेन डेथ के बाद उनके अंगों का दान किया गया। हालांकि दो की बजाय इस बार सिर्फ एक ही ग्रीन कॉरिडोर बना और शुभम की एक किडनी अरबिंदो से चोइथराम हॉस्पिटल भेजी गई। जबकि मेडिकल टेस्ट के बाद अनफिट पाए जाने पर लिवर का ट्रांसप्लांट नहीं हो सका, न ही हार्ट का उपयोग किया जा सका। आंखें और त्वचा भी दान की गई।

शुभम अटारिया

दरअसल, ब्रेन ट्यूमर से पीड़ित शुभम को इलाज के लिए गुरुवार को अरबिंदो हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था। डॉक्टरों ने उसी रात मरीज को ब्रेनडेड घोषित कर वेंटिलेटर पर रख दिया था। शुभम के पिता प्रहलाद व अन्य परिजनों ने बेटे के ऑर्गन डोनेट करने की इच्छा जाहिर की तो डॉक्टरों ने मुस्कान ग्रुप से संपर्क किया। ग्रुप के कार्यकर्ताओं ने भी मौके पर पहुंचकर परिजनों को उचित समझाइश दी और पूरी प्रक्रिया के बारे में बताया। परिजनों की सहमति मिलने पर मरीज के ब्रेनडेथ सर्टिफिकेशन की प्रक्रिया शुरू हुई।

भोपाल भेजना था लिवर, मेडिकल टेस्ट में अनफिट होने पर किया रद्द

अरबिंदो से किडनी ले जाते डॉक्टर व संस्था मुस्कान के सदस्य।

विलाप करते परिजन।

ब्रेनडेथ के बाद शुभम की किडनी जहां चोइथराम हॉस्पिटल भेजने की तैयारी थी, वहीं लिवर को भोपाल ले जाने की औपचारिकताएं पूरी कर ली गई थीं। देर रात जब मरीज की हालत अधिक गंभीर होती लगी तो समय से पहले ऑर्गन हार्वेस्टिंग प्रक्रिया शुरू कर दी गई। मेडिकल टेस्ट के बाद लिवर अनफिट पाए जाने पर अरबिंदो से एअरपोर्ट तक बनाया जाने वाला ग्रीन कॉरिडोर रद्द किया गया और लिवर को भोपाल नहीं भेजा गया। जबकि शुभम का हार्ट इंदौर से चेन्नई तक सीधे फ्लाइट कनेक्टिविटी न मिलने के कारण नहीं भेजा जा सका। चूंकि निर्धारित समय के भीतर ही हार्ट ट्रांसप्लांट किया जा सकता था। मरीज की किडनी महज 17 मिनट में अरबिंदो से चोइथराम हॉस्पिटल तक पहुंचाई गई।

महिला-पुरुष को ट्रांसप्लांट हुई किडनी

शुभम की किडनी इंदौर की रहने वाली 45 वर्षीय रेशमबाई पति गोंद्यालाल को अरबिंदो हॉस्पिटल में ट्रांसप्लांट की गई। जबकि दूसरी किडनी चोइथराम हॉस्पिटल में भर्ती होशंगाबाद निवासी 54 वर्षीय किशन साहू को ट्रांसप्लांट की गई।

■ 14वीं बार बना ग्रीन कॉरिडोर ■

दो लोगों को जिंदगी दे गया शुभम

एक किडनी सेम्स में ही प्रत्यारोपित, नहीं जा पाए लिवर और दिल

इंदौर @ पत्रिका. शहर में 14 माह में 14वी बार ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया। बुधवार रात सेम्स में भर्ती ग्राम छतरपुरा तहसील बागली जिला देवास निवासी शुभम (18) पिता प्रहलादसिंह अटारिया के ब्रेन डेड होने के बाद शनिवार को एक किडनी सेम्स में ही भर्ती ग्राम टकरावाड़ा निवासी 45 वर्षीय महिला और दूसरी चोइथराम अस्पताल में भर्ती होशंगाबाद निवासी 54 वर्षीय पुरुष को लगाई गई। एक आंख एमके इंटरनेशनल आई बैंक और त्वचा चोइथराम स्किन बैंक को दान की जाएगी।

सुबह 6.37 बजे से 6.54 के बीच 17 मिनट में किडनी सेम्स से चोइथराम अस्पताल तक पहुंचाई गई। शुभम को बुधवार रात अचानक तेज सिरदर्द हुआ था। सीटी स्कैन में उसे ब्रेन ट्यूमर निकला। इसके बाद उसकी सांसें थमने लगीं। डॉ. श्रीकांत वी रेगे को भी इलाज के लिए बुलाया। डॉक्टर उसके ब्रेनडेड होने की संभावना जता चुके थे। इसी बीच संस्था मुस्कान के सेवादार जीतू बगानी वहां पहुंचे और पिता प्रहलाद सहित परिजन की काउंसलिंग की।

अब दूसरों को जिंदगी देगा मेरा लड़का

शुभम के पिता प्रहलाद ने बताया कि उनके घर का चिराग तो बुझ गया, लेकिन उनके अंगदान होंगे और उससे किसी और की जिंदगी रोशन होगी। यह हमारे लिए खुशी की बात होगी।

प्रत्यारोपण के लिए शुक्रवार रात 9 बजे मेदांता हॉस्पिटल, गुड़गांव से तीन डॉक्टरों की टीम पहुंची। बताया जा रहा है कि लिवर निकाल लिया गया था, लेकिन अनफिट होने से नहीं भेजा गया।

देवास का युवक ब्रेनडेड...

सुबह होते ही भोपाल के लिए दौड़ेगा जिगर

14 माह में 14वीं बार बनेगा ग्रीन कॉरिडोर

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. एक बार शहर से सुबह होते ही एक जिगर दौड़कर एयरपोर्ट और वहां से उड़कर भोपाल पहुंचेगा। 14 माह में यह 14वां मौका है, जब शहर में कैडेवर ऑर्डन डोनेशन के लिए ग्रीन कॉरिडोर बनने जा रहा है। शनिवार सुबह देवास निवासी युवक के दोनों किडनी, लिवर, त्वचा और आंख किसी और की जिंदगी रोशन करेंगे। इस दौरान दो कॉरिडोर बनेंगे जिसमें चोइथराम अस्पताल तक एक किडनी के लिए और दूसरा लिवर के लिए होगा। लिवर भोपाल के सिद्धांता इंटरनेशनल हॉस्पिटल और एक किडनी चोइथराम अस्पताल भेजी जाएगी। दूसरी किडनी सेम्स में ही एक महिला मरीज को लगेगी। आंखें एमके इंटरनेशनल आई बैंक और त्वचा चोइथराम स्किन बैंक को दान की जाएगी। हार्ट चैन्नई भेजे जाने को लेकर प्रयास होते रहे लेकिन सफल नहीं हो पाए।

अचानक हुई मौत

वर्ष 2013 में शुभम एक बार वह गिर पड़ा था। उस दौरान सिटी स्कैन में कोई दिक्कत नहीं दिखी। बुधवार को वह दोबारा गिरा तो बेहोश हो गया था। कुछ घंटे बाद ही सिटी स्कैन में अचानक ब्रेन ट्यूमर और कुछ मिनटों बाद बेटे की सांस उखड़ते देख मां-पिता यकीन नहीं कर पा रहे थे। ऐसे में उन्हें बेटे को फिर से किसी और के शरीर में जिंदा रखने का निर्णय लिया। शनिवार सुबह वे खुद ही अपने बेटे के अंगों को अंतिम विदाई देंगे।

शुभम

ग्राम छतरपुरा तहसील बागली जिला देवास निवासी शुभम (18) पिता प्रहलाद सिंह अटारिया को बुधवार रात अचानक सिरदर्द हुआ था। गुरुवार को सेम्स में डॉक्टरों ने उसे ब्रेनडेड घोषित कर दिया। परिजन की सहमति के बाद अंगदान करना तय किया गया।

उम्मीद की प्रथम किरण स्वरुप

- शहर के पहला सफल लिवर प्रत्यारोपण के सन्दभे में श्री राजावत जी का नाम स्वर्णिम हो गया है
- पेशे से किसान राजावत जी ने सदैव दूसरो भलाई के बारे में सोचा एवं मरणोपरांत भी अंगदान करने की पहल उनके परिवार से आई
- नतीजन इंदौर शहर में पहला लिवर प्रत्यारोपित हुआ।
- हम नतमस्तक होकर राजावत परिवार का अभिनन्दन करते हैं ।

चन्द्रपाल सिंह राजावत

Brain dead saves four lives; green corridor created 15th time

First liver transplant in city

OUR STAFF REPORTER
Indore

A person declared brain dead saved life of four patients even as liver transplant was done successfully for the first time in the city on Wednesday.

Also, green corridor was created for the 15th time in the city to transport a heart to New Delhi.

After family members of Dewas-based Chandrapal Singh Rajawat, who was declared brain dead at a private hospital here on Tuesday evening, gave their con-

Chandrapal Singh Rajawat

Society for Organ Donation.

While Ajay Agrawal and Mukta Karamchandan are locals,

...eing transported to cit...

...gery ... , a ... reat- ...

Rajawat's heart ... planted to ... Neelam, a re... Rohtak," Dixit s... Resident ...

इंदौर में पहला लिवर ट्रांसप्लांट

60 साल के समाजसेवी को नई जिंदगी दे गया गांव का किसान

इंदौर। नगर प्रतिनिधि

तिलक नगर निवासी समाजसेवी व संघ पदाधिकारी 60 वर्षीय अजय अग्रवाल को एक किसान नई जिंदगी दे गया। उन्हें किसान चंद्रपाल सिंह राजावत का लिवर ट्रांसप्लांट किया गया। किसान का दिल दिल्ली पहुंचा, जहां रोहतक हरियाणा की 46 साल की महिला के शरीर में धड़का।

अजय

बुधवार को 15वीं बार ग्रीन कॉरिडोर बनने के साथ ही इंदौर के चोइथराम अस्पताल में पहला लिवर ट्रांसप्लांट हुआ। देवास जिले के मुनांडा गांव के 46 वर्षीय चंद्रपालसिंह राजावत सड़क दुर्घटना में घायल हो गए थे। उज्जैन से उन्हें इंदौर के सीएचएल अस्पताल रेफर किया गया, जहां मंगलवार रात ब्रेनडेड घोषित किया गया। परिजन ने खुद ऑर्गन डोनेशन सोसायटी से संपर्क किया। मध्य रात्रि को ही उन्हें चोइथराम अस्पताल शिफ्ट कर दिया गया था। यहां से सुबह 10.10 बजे एयरपोर्ट तक ग्रीन कॉरिडोर बना। आठ मिनट में दिल एयरपोर्ट पहुंचा। यहां से एक घंटा 20 मिनट में दिल्ली पहुंचा। बुधवार को फोर्टिस दिल्ली की टीम के साथ चोइथराम के गेस्ट्रो एंट्रोलॉजिस्ट डॉ. अजय जैन के नेतृत्व में लिवर ट्रांसप्लांट हुआ। चोइथराम के उप निदेशक (मेडिकल सर्विस) डॉ. अमित भट्ट ने बताया कि सात घंटे के ऑपरेशन के बाद रात आठ बजे लिवर ट्रांसप्लांट सफलतापूर्वक पूरा हुआ। डॉ. रतन सहजपाल, डॉ. विनीत गौतम, डॉ. नितिन शर्मा, डॉ. नीरज गुप्ता, डॉ. दीपक खेतान, डॉ. सुदेश शारद, डॉ. सीएस चमनिया सहित कई डॉक्टरों की टीम शामिल थी। उधर, डॉ. प्रदीप सालगिया द्वारा किडनी ट्रांसप्लांट किया गया। डोनेशन की प्रक्रिया देखने के लिए कमिश्नर संजय दुबे सुबह अस्पताल पहुंचे थे।

दिल्ली पहुंचा दिल, हरियाणा की महिला के शरीर में धड़का

इंदौर और राजगढ़ के मरीजों को मिली किडनी

ऑर्गन डोनेशन सोसायटी के मुताबिक हार्ट दिल्ली एम्स में 46 वर्षीय रोहतक हरियाणा की नीलम नामक महिला को ट्रांसप्लांट हुआ। यह महिला डायलेटेड कॉर्डियक मायोपेथी बीमारी से पीड़ित थी। इसके साथ ही राजगढ़ के 18 वर्षीय अर्पित अग्रवाल और भक्ति नगर की 46 वर्षीय मुक्ता करमचंदन को किडनी ट्रांसप्लांट हुआ।

15वां ग्रीन कॉरिडोर बना, देवास के मरीज का हार्ट भेजा दिल्ली

इंदौर में पहली बार लिवर ट्रांसप्लांट

भास्कर संवाददाता | इंदौर

शहर में बुधवार को 15वीं बार ग्रीन कॉरिडोर बना और पहली बार शहर में ही लिवर ट्रांसप्लांट हुआ। हार्ट एम्स दिल्ली भेजा गया और किडनियां यहीं पर दो मरीजों को दी गईं। अभी तक लिवर और हार्ट यहां से दिल्ली, मुंबई सहित अन्य बड़े शहरों को भेजा जाता था।

देवास के मंडाहेड़ा निवासी 46 वर्षीय किसान चंद्रपाल भूपेंद्र सिंह राजावत सड़क हादसे में घायल हो गए थे। उन्हें इलाज के लिए इंदौर लाया गया था, लेकिन मंगलवार को ब्रेन डेड घोषित किया गया था। बुधवार सुबह 9.30 बजे चोइथराम अस्पताल से एयरपोर्ट तक ग्रीन कॉरिडोर बनाया और हार्ट दिल्ली भेजा गया। वहीं लिवर चोइथराम अस्पताल में एक मरीज को ट्रांसप्लांट किया गया है। खास बात यह रही कि चंद्रपाल के परिवार के रघुवीर सिंह राठौर सहित अन्य परिजन अंगदान के लिए आगे आए। उन्होंने खुद इंदौर ऑर्गन डोनेशन सोसायटी से संपर्क कर अंगदान की इच्छा जताई।

दिल्ली से आई टीम ने 60 वर्षीय व्यक्ति को लगाया लिवर

शहर में हुए पहले लिवर ट्रांसप्लांट के लिए दिल्ली से विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम आई। विशेषज्ञों में डॉ. अमिताभ श्रीवास्तव के साथ डॉ. अजय जैन, डॉ. विनीत गौतम सहित अन्य डॉक्टरों ने साकेत नगर निवासी 60 वर्षीय अजय अग्रवाल को लिवर प्रत्यारोपित किया। वहीं किडनियां चोइथराम में ही राजगढ़ के 18 वर्षीय अर्पित अग्रवाल और शहर की 46 वर्षीय महिला मुक्ता कर्मचंदान को दी गईं। उधर, हार्ट दिल्ली एम्स में रोहतक की 51 वर्षीय महिला को लगाया गया।

दिल दान करने वाली प्रथम महिला बनी वीना परयानी

- इंदौर ने २७ वर्ष जिस अवसर का इन्तजार किया उसे सफल बनाया श्रीमती वीना परियानी ने।
- उन्हें मध्य प्रदेश के पहले दिल प्रत्यारोपण का श्रेय मिला।
- ४९ बर्षीय श्रीमती वीणा परियानी के पति जगदीश रिक्शा चालक है धार्मिक प्रवत्ति से ओत प्रोत श्री जगदीश को उनके धर्मगुरु की प्रेरणा से अपनी पत्नी वीणा को मरणोपरांत भी किसी में देखने का मौका मिला।
- परियानी दंपत्ति की तीनो बेटियों ने भी मुश्किल वक़्त में पिता का साथ दिया।
- परियानी परिवार का हार्दिक अभिनन्दन।

वीना परयानी

Feel proud she gave life to two, say Veena's relatives

Her Skin & Eyes Also Donated

TIMES NEWS NETWORK

Pravin Barnale

A team of doctors and hospital staff carries organ from Choithram hospital on Friday

Indore: Family members of Veena Pariyani were proud of the fact that in death she gave life to two persons and improved the quality of life of several others.

Her heart and liver were transplanted into individuals at Medanta Hospital and Choithram Hospital, respectively. Her skin and cornea were saved for others in the banks.

"When I brought my wife to the hospital, I was worried about her health. When the doctors informed me about her not responding to the treatment, it was very hard to accept. The proudest moments of my life however came at the same time after I decided to donate my wife's organs," Jagdish Pariyani told TOI.

The father of three girls, jagdish brought Veena to Choithram Hospital after she collapsed at her home on Wednesday's morning.

Intensive care unit (ICU) in-charge, Dr Rajat Shahajpal and Dr Amit Joshi informed Pariyani about her deteriorated condition. On the intervening night of Wednesday and Thursday at 2.10 am, the woman was declared brain dead.

"The death of my wife is irreparable. When I informed my spiritual teachers, Shri Swami Kamal Maharaj Udasi (Dwarkapuri) and Jayesh Maharaj (Rajmohalla) about this, they asked me to donate her organs," Pariyani told TOI.

To this, Pariyani contacted volunteers of Muskan Group and the office-bearers of Indore Organ Donation Society, who in turn, coordinated with the doctors and local administration to make the first hearth transplantation of the state possible.

This apart, liver, eyes and skin of the deceased were also donated.

While he managed to dodge sleep during the entire episode, other family members waiting in Choithram Hospital's compound were found to be equally honoured by the decision to help many by donating their family member's organs.

Jagdish's brother, Dilip Pariyani said losing someone dear is a major setback but it was also a matter of pride to help many people.

GREEN CORRIDOR CREATED FOR THE SIXTEENTH TIME TO TRANSPORT HEART AND LIVER OF 49-YEAR-OLD BRAIN DEAD PATIENT FROM CHOITHRAM TO MEDANTA

FIRST IN STATE: Successful heart transplant in city

Heart and liver of 49-year-old Veena Pariyani being transported from Choithram Hospital to Medanta Hospital FP PHOTO

● OUR STAFF REPORTER
Indore

Creating the 16th green corridor, city doctors also scripted a record for transplanting heart for the first time in the state on Friday.

Heart of 49-year-old brain dead Veena Pariyani was transported to Medanta Hospital from Choithram Hospital and was successfully transplanted to a 47-year-old male patient while her liver was also transplanted to a 46-year-old patient in Choithram Hospital.

The green corridor was prepared at 1.40 pm on 12 km stretch between Choithram Hospital and Mendanta Hospital and the ambulance carrying heart covered the distance in just seven minutes.

"Veena Pariyani was admitted to the hospital with brain haemorrhage. She was declared brain dead on Thursday night after which the family members decided to donate her organs. Her kidneys couldn't be retrieved as they were not functioning properly," said Indore Organ Donation Society secretary Dr Sanjay Dixit.

A team of doctors led by Dr Anil Bhan of Mednata, Gurgaon reached in city on Friday morning to retrieve heart of Veena in Choithram Hospital and transplanted it successfully to Sanjay Agrawal, a grocery merchant of Mhow, who was suffering from heart ailments for last seven years in Medanta Hospital.

The surgery continued for more than three hours.

Meanwhile, a team of doctors from Fortis Hospital, New Delhi Dr Abhijit Srivastava, Dr Vishal Chaurasiya and Dr Piyush Srivastava led the procedure of liver retrieval and transplant accompanied by experts of Choithram Hospital Dr Sudesh Sharda, Dr Ajay Kumar Jain and Dr Vinit Gautam. The liver was transplanted to 46-year-old Dharmveer Jaiswal, a labour, of Ujjain who was suffering from liver cirrhosis.

SAMAJ GURUS ENCOURAGED THE FAMILY

Rickshaw driver Jagdish Pariyani, husband of Veena Pariyani, had refused for organ donation initially but the activists of Muskan group convinced him with the help of spiritual gurus of Sindhi community. Veena is survived with three daughters.

THEY PLAYED MAJOR ROLE IN SUCCESSFUL TRANSPLANTATION

Divisional Commis-sioner Sanjay Dubey led the process and coordination with the help of Indore Organ Donation Society secretary Dr Sanjay Dixit. Activists of Muskan Group Jeetu Bagani, Sandeepan Arya, Renu Jaisinghani, Rajendra Makhija and Harpal Sitlani managed to convince and encourage the family members and coordinated with the administration for successful transplantation.

Choithram Hospital Dr Sunil Dubey, Dr Nitin Sharma, Dr Ratan Sahajpal, Dr Rupayan, Dr Amit Joshi, Suresh Carlton and doctors of Medanta Hospital were also part of creating the history.

TWO MORE HOSPITALS TO BE READY FOR HEART TRANSPLANT

Dr Sanjay Dixit said that they are in process to give heart transplant permission to CHL Hospital and Choithram Hospital. Both hospitals will be ready for transplant in next couple of months.

"Indore has now carved its place in the list of few cities transplanting heart. It was the first heart transplant in the state and was the second liver transplant. A liver was transplanted in Choithram Hospital a month ago," Dr Dixit said. Indore has topped the list of organ donation in the country.

FREE PRESS JOURNAL Sat, 11 March 2017
epaper.freepressjournal.in//c/17461054

इंदौर में प्रदेश का पहला हार्ट ट्रांसप्लांट, अब बोन मैरो की तैयारी

11 वां शहर बना इंदौर, जहां हो सकेंगे हार्ट ट्रांसप्लांट

17 महीने में 16वीं बार बना अंगदान के लिए ग्रीन कॉरिडोर

46 वर्षीय

भास्कर संवाददाता | इंदौर

वीणा परयानी

अंगदान के लिए इंदौर में शुक्रवार को फिर ग्रीन कॉरिडोर बना। 17 महीने में 16वीं बार। ब्रेन डेड घोषित की गई द्वारकापुरी निवासी वीणा (49) पति जगदीश परयानी का हार्ट शहर के ही एक निजी अस्पताल में महू के संजय अग्रवाल (47) और लिवर उज्जैन के धर्मेंद्र जायसवाल (46) को सफलतापूर्वक ट्रांसप्लांट किया गया। इसी के साथ इंदौर मप्र का पहला शहर बन गया, जहां हार्ट ट्रांसप्लांट किया गया। इंदौर देश के उन चुनिंदा 11 शहरों में भी शामिल हो गया, जहां हार्ट ट्रांसप्लांट होते हैं। अन्य

पति ने आखिरी बार पत्नी के दिल को छूकर देखा

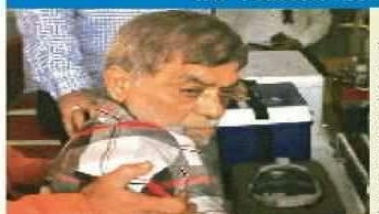

सात मिनट में तय किया 12 किमी का सफर

दोपहर करीब डेढ़ बजे वीणा का हार्ट लेकर एम्बुलेंस चोइथराम अस्पताल से सात मिनट में 12 किमी का सफर तय कर मेदांता अस्पताल पहुंची। वहां डॉ. भान और उनकी टीम ने करीब तीन घंटे की सर्जरी में अग्रवाल को हार्ट ट्रांसप्लांट किया। अग्रवाल की पत्नी ने बताया पति को सात साल से हार्ट संबंधी समस्या थी। उन्हें पेसमेकर लगा था। प्रशासन की सूचना पर उन्हें रात में ही मेदांता में भर्ती करवाया था। डॉ. अमित भट्ट ने बताया चोइथराम अस्पताल में वीणा का लिवर जायसवाल को ट्रांसप्लांट किया गया। डॉ. अजय जैन, डॉ. विनीत गौतम, डॉ. अजिताभ श्रीवास्तव, डॉ. विशाल चौरसिया और डॉ. पीयूष की टीम

अब बोन मैरो ट्रांसप्लांट के लिए प्रयास

बेहद खुशी की बात है कि प्रदेश में पहली बार इंदौर में हम हार्ट ट्रांसप्लांट सफलतापूर्वक कर पाए। आगे हमारे दो अहम प्रयास रहेंगे। पहला यह कि हार्ट ट्रांसप्लांट के मामले में इंदौर और हमारा प्रदेश सेंट्रल इंडिया में नंबर वन बने। वहीं, अगले चरण में बोन मैरो ट्रांसप्लांट भी हो। - संजय दुबे, संभागायुक्त

अंगदान की खास बातें

- हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए प्रशासन ने अंगदान की वेबसाइट के जरिए मरीज का चयन किया।
- महिला के पति ने भी अंगदान के फॉर्म भरने की बात कही।

अंगदान महादान को सार्थक किया

•२३ बर्षीय कर्मठ श्री संजय ने अपने संक्षिप्त जीवनकाल में दूसरो के समक्ष मिसाल क़ायम की है।

•संजय जी बिजली विभाग़ में बतौर सहायक कार्यरत थे।

• कर्तव्य का पालन करते हुए श्री संजय जी ने अपने प्राण त्याग दिए।

•परिवार ने दुःख की घडी में खुद को संभालते हुए अंगदान का फैसला किया।

•श्री संजय कुकड़ेश्वर जी के परिवारजन
•का हार्दिक अभिनन्दन

संजय कुकड़ेश्वर

सलाम इंदौर

इंदौरियों ने एक बार फिर इनसानी जज्बा मजबूत करते हुए अंगदान महादान को सार्थक करते हुए देश में सबसे आगे रहने का रिकॉर्ड बनाया

एक दिन में दो ग्रीन कॉरिडोर

अनुप्रिया सिंह ठाकुर ▸ इंदौर

अंगदान-महादान के वाक्य को सार्थक करते हुए बुधवार को एक नहीं, बल्कि दो परिवारों ने इस पर अमल किया और उनका यह प्रयास इंदौर के ऐतिहासिक दिन के नाम दर्ज हो गया। बुधवार को किसी अन्य की जिंदगी बचाने के लिए एक ही दिन में दो बार शहर की रफ्तार रोकी गई। 24 घंटे के भीतर अलग-अलग समय दो ग्रीन कॉरिडोर तैयार हुए और ट्रांसप्लांट के लिए ऑर्गन एक से दूसरे अस्पताल भेजे गए। दो परिवारों की इस जिंदादिली ने जहां कई परिवारों को खुशियां लौटा दीं, वहीं इंदौर का नाम अंगदान करने वाले शहरों और राज्यों में सबसे ऊपर ला खड़ा किया।

संजय के ऑर्गन ट्रांसप्लांट के लिए एम्बुलेंस में ले जाए गए।

17वां ग्रीन कॉरिडोर

पोल से गिरकर लगी थी गंभीर चोट

बिजली कंपनी में कांट्रेक्ट पर काम कर रहे भागीरथपुरा निवासी 23 वर्षीय संजय कुकड़ेश्वर को सोमवार को खंभे से गिरने पर सीएचएल अस्पताल में भर्ती कराया गया था। सिर में आई गंभीर चोट के कारण मंगलवार को डॉक्टरों ने उसे ब्रेन डेड घोषित कर दिया। परिजन ने अंगदान की इच्छा जाहिर की तो मुस्कान ग्रुप से संपर्क किया गया। सेवादार संदीपन आर्य और जीतू बागानी तुरंत अस्पताल पहुंचे और परिजन को नियमों की पूरी जानकारी देने के साथ काउंसलिंग की। इस बीच डॉक्टरों की टीम ने मंगलवार दोपहर 12.30 और शाम 7.40 बजे संजय को ब्रेन डेड घोषित किया। इधर, सोसायटी फॉर ऑर्गन डोनेशन के अध्यक्ष कमिश्नर संजय दुबे और डॉ. संजय दीक्षित संजय के अंगों को जरूरतमंद मरीजों तक पहुंचाने के लिए अस्पतालों से संपर्क करते हुए टीम को निर्देशित कर रहे थे। अंगदान की स्थिति स्पष्ट होते ही बुधवार तड़के डॉक्टरों की टीम ने सीएचएल अस्पताल में ऑर्गन रिट्रायवल की प्रक्रिया शुरू की। लगातार टेस्ट होने से समय ज्यादा लगा और सुबह करीब 10.41 बजे पहला ग्रीन कॉरिडोर चोइथराम अस्पताल के लिए बनाया गया। डॉक्टरों ने पहले लिवर सुरक्षित चोइथराम अस्पताल भिजवाया। उसके तुरंत बाद दूसरा कॉरिडोर 10.48 बजे ग्रेटर कैलाश अस्पताल के लिए बना, जहां संजय की एक किडनी ट्रांसप्लांट के लिए भेजी गई।

थम नहीं रहे थे मां के आंसू, पिता व भाई भी बेहाल

अंगदान प्रक्रिया के दौरान बिलखते परिजन।

फूट-फूटकर रोती मां।

ऑर्गन रिट्रायवल के समय संजय का पूरा परिवार और रिश्तेदार वहीं मौजूद थे। बेटे को किसी अन्य के शरीर में जिंदा देखने का सुकून कुछ पल गर्व का अहसास तो करा देता, लेकिन दूसरे ही पल उसे खो देने का गम आंसुओं में छलक पड़ता। रिट्रायवल के बाद जैसे ही संजय के अंग ओटी से बाहर आए, परिजन ने बॉक्स को छुआ और बिलख पड़े। अस्पताल में मां आशा, पिता गोवर्धन, भाई सुनील और बहन वर्षा का रो-रोकर बुरा हाल था। मुस्कान ग्रुप के सेवादारों ने उन्हें सांत्वना दी।

कंपनी ने मदद नहीं दी अस्पताल ने ली फीस

संजय बिजली कंपनी में ठेके पर काम करता था, लेकिन हादसे के बाद कंपनी ने इलाज के लिए आर्थिक मदद नही की। परिजन ने आरोप लगाया अस्पताल ने भी उन्हें ठगने में कोई कसर नहीं छोड़ी। भर्ती करते समय 20 हजार और बाद में 40 हजार रुपए लिए गए। मामला कमिश्नर तक पहुंचा तो उन्होंने अस्पताल प्रबंधन को ब्रेन डेड के बाद के 40 हजार रुपए लौटाने का आदेश दिया।

एक ग्रीन कॉरिडोर सुबह, दूसरा रात में बना, लिवर और किडनी इंदौर में ही हुए ट्रांसप्लांट

प्रदेश में पहली बार एक दिन में दो लोगों के अंगदान, छह मरीजों को मिला जीवनदान

इंदौर। नईदुनिया प्रतिनिधि

अंगदान के क्षेत्र में इंदौर ने एक बार फिर इतिहास रचा। प्रदेश में पहली बार एक दिन में दो ब्रेन डेड लोगों के अंगदान किए गए। एक ग्रीन कॉरिडोर बुधवार सुबह, जबकि दूसरा रात में बना। दो लोगों के अंगों से इंदौर में छह मरीजों को जीवनदान मिला। दोनों ही दानदाताओं का दिल तकनीकी कारणों से काम नहीं आ सका, जबकि किडनी चोइथराम, सीएचएल व बॉम्बे अस्पताल के मरीजों को ट्रांसप्लांट हुई। इसी के साथ इंदौर में 17 महीने में 20 अंगदान हुए।

बुधवार सुबह भागीरथपुरा निवासी 23 साल के संजय कुकड़ेश्वर के अंगदान किए गए। संजय बिजली के खंभे से गिरने के बाद सीएचएल अस्पताल में भर्ती था। मंगलवार को उसे ब्रेनडेड घोषित कर दिया गया था। सुबह 9.30 बजे ग्रीन कॉरिडोर के जरिए लिवर चोइथराम अस्पताल, जबकि एक किडनी सीएचएल व दूसरी ग्रेटर कैलाश अस्पताल में मरीज को ट्रांसप्लांट की गई।

जबकि खंडवा निवासी 68 वर्षीय तारा देवी नामनानी को बुधवार शाम 6 बजे ब्रेन डेड घोषित किया गया। तारा देवी को ब्रेन हेमरेज के कारण सीएचएल में भर्ती कराया गया था। बुधवार रात 11.30 बजे ग्रीन कॉरिडोर बनाकर एक किडनी चोइथराम अस्पताल, जबकि दूसरी किडनी बॉम्बे अस्पताल भेजी गई। ऐन वक्त पर तारा देवी का लिवर खराब होने की बात पता चली, जिसके कारण वह दान नहीं हो पाया।

बेटे के अंगों को विदा करते वक्त पिता की आंखें छलक उठीं।

अस्पताल ने थमा दिया था 40 हजार का बिल : संजय की मां को यकीन नहीं हो रहा था कि उसका बेटा अब लौटकर नहीं आएगा।

संजय के ब्रेन डेड घोषित होने के बाद अंगदान के लिए उसके परिजन की काउंसलिंग हुई। वे दूसरों को जिंदगी देने के लिए राजी हो गए। इस ऐतिहासिक घड़ी में जब अस्पताल ने पिता को 40 हजार रुपए का बिल थमाया तो उन्होंने दुखी मन से कहा कि उन्होंने अपने बेटे के अंग देने में एक मिनट नहीं लगाया और बदले में अस्पताल ने बिल थमा दिया। कमिश्नर संजय दुबे के हस्तक्षेप के बाद अस्पताल ने परिजन से कोई पैसा नहीं लिया, वहीं मरीज को भर्ती करते समय जमा कराया पैसा भी लौटा दिया गया।

संजय का लिवर चोइथराम अस्पताल में 56 साल के सतीश आनंद नामक मरीज को ट्रांसप्लांट किया गया। मरीज कई वर्षों से लिवर में संक्रमण की बीमारी से जूझ रहा था। उधर एक किडनी सीएचएल अस्पताल में ही रीवा के 30 साल के रोहित मिश्रा को ट्रांसप्लांट हुई, जबकि दूसरी किडनी ग्रेटर कैलाश अस्पताल में 63 वर्षीय पुष्पा शिल्पी को लगाई गई।

समझाया तो अंगदान के लिए राजी हो गए

इधर ब्रेन हेमरेज की शिकार तारा देवी की स्थिति में सुधार नहीं होने पर परिजन छुट्टी कराकर ले जा रहे थे। परिजन ने कागजों पर साइन भी कर दिए थे, लेकिन मरीज को वेंटिलेटर से नहीं हटाया था। इसी बीच अस्पताल में संजय कुकड़ेश्वर की अंगदान की प्रक्रिया चल रही थी। ग्रुप के सदस्यों ने तारा देवी के परिजन को भी अंगदान की जानकारी दी। कुछ देर समझाइश के बाद वे भी इसके लिए तैयार हो गए। तारा देवी की परिवार में दो बेटियां हैं।

परिजन के आभारी हैं

पहली बार प्रदेश में एक दिन में दो बार ग्रीन कॉरिडोर बना है। दो लोगों के अंगदान किए गए। परिजन के हम आभारी हैं कि उन्होंने जरूरतमंदों को जिंदगी देने में संवेदनशीलता दिखाई।

– **संजय दुबे**
कमिश्नर व अध्यक्ष ऑर्गन डोनेशन सोसायटी

सेंट्रल इंडिया में पहली बार; इंदौर में एक दिन में बने चार ग्रीन कॉरिडोर

23 वर्षीय युवक और 68 साल की महिला के लिवर और किडनियों से पांच लोगों को मिलेगी नई जिंदगी

भास्कर संवाददाता | इंदौर

अंगदान को लेकर इंदौर शहर फिर देशभर के लिए मिसाल बना। बुधवार को चार ग्रीन कॉरिडोर बने। डेढ़ साल में 17वीं और 18वीं बार। ब्रेन डेड घोषित किए गए 23 वर्षीय युवक का लिवर व दोनों किडनियां दान की गईं। वहीं, 68 वर्षीय महिला का अंगदान देर रात किया गया। नॉर्थ और सेंट्रल इंडिया में पहला ऐसा मौका है जब किसी शहर में 12 घंटे में दो कैडेवर ऑर्गन डोनेशन हुए। पूरे देश में भी ऐसे बहुत कम केस हुए।

भागीरथपुरा निवासी संजय गोरधनलालजी कुकड़ेश्वर सोमवार रात 11.30 बजे बिजली पोल पर फॉल्ट ठीक करने के दौरान गिर गए थे। उन्हें सीएचएल अस्पताल में भर्ती किया था। मंगलवार दोपहर 12:30 बजे पहली और रात 7.40 बजे दूसरी बार उन्हें ब्रेन डेथ घोषित किया गया। इसके बाद परिजन ने उसके अंगदान का फैसला दिया। उसका लिवर शहर के ही 56 वर्षीय सतीश आनंद और किडनियां रीवा के रोहित मिश्रा और 63 वर्षीय पुष्पा शिल्पी को प्रत्यारोपित की गईं। इसके लिए सीएचएल से दो ग्रीन कॉरिडोर बनाए। सुबह 10.41 बजे लिवर चोइथराम और 10.48 बजे एक किडनी ग्रेटर कैलाश हॉस्पिटल भेजी गई। दूसरी किडनी सीएचएल में ही ट्रांसप्लांट की गई। इंदौर सोसायटी फॉर ऑर्गन डोनेशन ने संजय का हार्ट व लंग्स देने की कोशिश भी की। चेन्नई के अस्पतालों से संपर्क भी किया गया, लेकिन यह संभव नहीं हो पाया।

पिता बोले- किसी और में हमेशा जीवित रहेगा मेरा बेटा

बेटे संजय का लिवर जब सीएचएल से चोइथराम अस्पताल ले जाया जा रहा था, तब उसके पिता भावुक हो गए। उन्होंने उसे छुआ और कहा कि मेरा बेटा किसी और में हमेशा जीवित रहेगा। फोटो- दीपक जैन

युवक का अंगदान देख आगे आए महिला के परिजन

बुधवार को ही सीएचएल हॉस्पिटल में पंधाना की तारा देवी नेभनानी को ब्रेन डेथ घोषित किया गया। सुबह जब संजय के अंगदान के लिए अस्पताल से ग्रीन कॉरिडोर बनाया जा रहा था तो यह देख नेभनानी परिवार प्रेरित हुआ और अंगदान की इच्छा जताई। रात करीब 12 बजे उनकी दोनों किडनी दो मरीजों को दी गईं। इसके लिए सीएचएल से चोइथराम और बॉम्बे हॉस्पिटल तक ग्रीन कॉरिडोर बनाए गए। लिवर नहीं दिया जा सका।

इंदौर के लिए यह बहुत बड़ी उपलब्धि है कि इतने कम समय में 18 बार कैडेबर ऑर्गन डोनेशन हुए। संभवतः देश में यह पहला मौका है जब किसी शहर में 12 घंटे में दो कैडेबर ऑर्गन डोनेशन हुए। शहर के लोगों की जागरूकता, अधिकारी, डॉक्टर, काउसंलर, स्वयंसेवी संस्थाओं के समन्वय व इच्छाशक्ति से यह संभव हो सका। -**संजय दुबे**, संभागायुक्त

इंदौर की स्टार बनीं तारादेवी

- ६८ वर्षीय तारादेवी को बिजली का झटका लगने से ब्रेन स्ट्रोक होने के कारण सी एच एल अस्पताल में भर्ती करवाया गया ,जहा पर डॉक्टर द्वारा उन्हें ब्रेन डेड घोषित किया गया |

- मृत्यु उपरान्त उनके लीवर और दोनो किडनी दान की गयी|

- कारणवश उनके दिल का दान नहीं हो पाया |

- श्रीमती तारादेवी जी के परिवारजन का हार्दिक अभिनन्दन

तारादेवी नेभनानी

4 **INDORE CITY** FREE PRESS www.freepressjournal.in INDORE | THURSDAY | MAY 11, 2017

Green Corridors created in city for 18th time in 19 months

23-year-old gives new lease of life to three

With successful formation of 'Green corridors' twice in a day, Indore has become the only city in state and probably in the country, for quick transport and transplant of two brain dead patients in a day.

A 23-year-old youth was declared brain dead on Tuesday evening in CHL Hospital while a 68-year-old woman was declared brain dead in the same hospital on Wednesday. Family members of the woman voluntarily came forward to donate her organs

Organs being taken from CHL Hospital

Corridor created for transporting the organs FPPHOTOS

• OUR STAFF REPORTER
INDORE

Three people got new lease of life as organs of 23-year-old Sanjay Kukreshwar were transplanted to them in different hospitals of the city on Wednesday. Sanjay was declared brain dead in CHL Hospital on Tuesday evening and one of his kidneys and liver were transported to two different hospitals via two 'Green Corridors' while one kidney was transplanted to a patient in CHL Hospital.

Sanjay Kukreshwar

Sanjay Kukreshwar, a resident of Bhagirathpura, was severely injured after falling from an electric poll while repairing the line on Monday evening. On Tuesday evening, he was declared brain dead after which Sanjay's family members decided to donate his organs to keep their boy alive in others' body.

Initially, liver of the patient was harvested by the doctors and it was taken to Choithram Hospital through first green corridor at around 9.30 am. Just about 15 minutes another team of doctors left the hospital with another kidney to Greater Kailash Hospital.

"Liver was transplanted in the Choithram Hospital to 56-old Satish Anand who was suffering from Hepato Cellular Carcinoma while Sanjay's one kidney was given to a 30-year-old patient of Rewa in CHL Hospital. Another kidney was sent to Greater Kailash Hospital and was transplanted to 63-yearold woman Pushpa Shilpi," Secretary of Indore Organ Donation Society Dr Sanjay Dixit said.

District administration, traffic police, Choithram Hospital administration, CHL Hospital administration, Greater Kailash Hospital, NGO Muskan Group and residents of the city coordinated to make green corridor for the 17th time in last 19 months.

FATHER TOOK BRAVE DECISION

Decision of donating the organs was taken by Sanjay's father Girdharilal with a wish to keep his son alive even after death. His decision was supported by other family members and other family members also pledged to donate his organs.

HEARTS COULD NOT BE RETRIEVED

Dr Sanjay Dixit said that heart of both the brain dead patients couldn't be retrieved as Sanjay's heart was not working properly while heart of Taradevi was not so healthy to retrieve and transplant.

Skins of both the patients were harvested in Choithram Hospital while corneas were harvested by MK International Eye Bank.

CHL charges Rs 60K, returns it on admin's direction

CHL Hospital administration had taken Rs 60,000 allegedly from the family members of Sanjay at the time of admission and they even asked for more money after he was declared brain dead. However, the insensitivity of the hospital administration was circulated in media and a complaint was lodged to Divisional Commissioner Sanjay Dubey, who later intervened and directed the hospital to return all the money taken from the family members.

Family donates organs of 68-year-old woman

Taradevi Manakchand was declared brain dead during her treatment for brain stroke at CHL Hospital on Wednesday evening. Family members of the 68-year-old woman decided to donate her organs voluntarily and contacted the members of Indore Organ Donation Society and NGO Muskan Group.

"It was not only surprising but pleasant for us that the family members voluntarily informed us to donate the organs. After completing the transplant process of Sanjay Kukreshwar, our team started preparing for another retrieval and transplant of the organs," secretary of Indore Organ Donation Society Dr Sanjay Dixit said.

Taradevi Manakchand

He said that Taradevi was declared brain dead on Wednesday morning at 10 am initially and at 4.40 pm for the second time.

"Liver and one kidney of the patient were transported to Choithram Hospital through 'Green Corridor' prepared in night and was transplanted to a patient there while one of the kidneys were sent to Bombay Hospital for transplant," Dr Dixit said.

It was for the first time when organs of two brain dead patients were transported through green corridors in a day in the state and probably in the country.

With the count of this corridor, city has created the record of creating 18 green corridors, including two on Wednesday, in last 19 months.

FREE PRESS Thu, 11 May 2017 epaper.freepressjournal.in//c/18965708

18वां ग्रीन कॉरिडोर...

परिजन ने मरीज को घर ले जाने की कर ली थी तैयारी

सीएचएल अस्पताल में संजय के अंगदान को लेकर परिजन की काउंसलिंग करते वक्त ग्रुप के सामने एक और ब्रेन डेड मरीज का मामला आया। हालांकि तब तक परिजन अपने मरीज को लामा कर घर ले जाने की तैयारी कर चुके थे, लेकिन सेवादारों ने मरीज और परिजन की जानकारी ली तो उनकी भी काउंसलिंग की गई। कुछ ही देर में परिजन ने अंगदान का फैसला कर लिया, जिसके बाद बुधवार को ही देर शाम खंडवा निवासी 68 वर्षीय तारादेवी नमनानी का केडेबर ऑर्गन डोनेशन किया गया। उन्हें ब्रेन स्ट्रोक के बाद सीएचएल अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहां डॉक्टरों ने ब्रेन डेड घोषित कर दिया। मुस्कान ग्रुप के सेवादारों की काउंसलिंग के बाद परिजन ने तारादेवी के अंगदान को राजी हो गए। डॉक्टरों ने सुबह 10.30 और शाम 4.40 बजे दूसरी बार ब्रेन डेड घोषित किया। इसके बाद ऑर्गन रिट्रायवल कर पहला ग्रीन कॉरिडोर सीएचएल से चोइथराम अस्पताल तक बनाकर मरीज के लिवर व किडनी ट्रांसप्लांट के लिए भेजे गए। दूसरा ग्रीन कॉरिडोर सीएचएल से बॉम्बे हॉस्पिटल तक बना, जहां दूसरी किडनी भेजी गई।

तारादेवी नमनानी

दस घंटे बाद चाय पी और जुट गए आठ घंटे के लिए

बुधवार का दिन चोइथराम अस्पताल के डॉक्टरों की टीम के लिए चुनौतीभरा होने के साथ रोमांचक भी साबित हुआ। एक ही दिन में दो बार लिवर ट्रांसप्लांट करना नया अनुभव दे गया। अस्पताल के ट्रांसप्लांट विभागाध्यक्ष डॉ. अजय जैन के मुताबिक सुबह दस बजे शुरू हुआ पहला लिवर ट्रांसप्लांट रात आठ बजे तक चला। इसके बाद डॉक्टरों की टीम ने एक-एक कप चाय पी, कुछ देर आराम किया और रात करीब 11 बजे दूसरा ट्रांसप्लांट शुरू किया, जो गुरुवार सुबह छह बजे खत्म हुआ। चूंकि दिल्ली की एक्सपर्ट टीम डॉक्टरों के साथ थी, इसलिए ज्यादा परेशानी नहीं आई।

दिल नहीं हो सके ट्रांसप्लांट

विशेषज्ञों के मुताबिक संजय को बिजली का झटका लगने के बाद ब्रेन डेड घोषित किया, इसलिए उसका दिल ट्रांसप्लांट के लिए उचित नहीं माना गया, जबकि तारादेवी की उम्र 68 वर्ष थी और लिवर व हार्ट में इन्फेक्शन था। ऐसी स्थिति में दोनों मरीजों के दिल ट्रांसप्लांट नहीं किए जा सके।

रिट्रायवल कर तारादेवी के ऑर्गन ट्रांसप्लांट के लिए ले जाए गए।

...तो आंकड़ा 22 तक पहुंच जाता

प्रदेश का पहला ग्रीन कॉरिडोर 7 अक्टूबर 2015 को बनाया गया था। तब से अब तक 19 महीने में 18 ग्रीन कॉरिडोर तैयार कर इंदौर ने अंगदान महादान में अहम भूमिका निभाई है। हालांकि पिछले दिनों भी चार मरीजों के अंगदान की संभावना जताई गई थी, लेकिन अलग-अलग कारणों से ऐसा नहीं हो सका। अन्यथा अब तक इंदौर में बने ग्रीन कॉरिडोर का आंकड़ा 22 तक पहुंच जाता।

जनसंख्या के अनुसार इंदौर अव्वल

केडेवर ऑर्गन डोनेशन में इंदौर न सिर्फ मप्र, बल्कि अन्य प्रदेशों व शहरों में भी पहले पायदान पर है। अंगदान के प्रतिशत को उस शहर की जनसंख्या के मान से आंका जाता है। चूंकि प्रति दस लाख जनसंख्या पर वर्ष में औसतन एक या दो अंगदान होते हैं, इस लिहाज से इंदौर की 30 लाख जनसंख्या होने पर वर्ष में तीन या चार अंगदान होने का अनुमान लगाया जाता है, लेकिन यहां 19 महीनों में 18 बार केडेवर ऑर्गन डोनेशन हुआ है। यानी वर्ष में 12 अंगदान हो रहे हैं। वहीं चेन्नई, दिल्ली और मुंबई में उन शहरों की जनसंख्या के मुताबिक अंगदान का आंकड़ा काफी कम है। इस तरह इंदौर अव्वल साबित हो रहा है।

देश का गौरव बना इंदौर

यह बहुत ही गर्व की बात है कि अंगदान के क्षेत्र में इंदौर पूरे देश को दिशा-निर्देश दे रहा है। अब पूरे संभाग के लोगों का साथ मिल रहा है। इसमें डॉक्टरों की टीम और मुस्कान ग्रुप का भी बेहतर योगदान है।

-संजय दुबे, कमिश्नर

मुंबई के 11 साल के मासूम को इंदौर के सुमित ने दी नयी धड़कन

- सड़क दुर्घटना में घायल होने के बाद 5 दिन से बॉम्बे अस्पताल में भर्ती ३५ वर्ष के सुमित जैन का दिल ,लिवर,दोनों किडनी और आँखे दान कर दी गयी |

- धरमपुरी धार में राशन कि दुकान चलाने वाले सुमित को उनकी गर्भवती पत्नी प्रियंका,9 माह कि बच्ची वीरा ,उनकी माता और लकवे से पीड़ित पिता श्री कैलाश चन्द्र जैन ने अंतिम विदाई दी |

- बिलखते हुए माँ ने कहा कि मरने के बाद भी दुसरो को जीवन दे गया मेरा बेटा |
- हम उनके परिवार को सादर आमंत्रित करते है|

इंदौर में 19वां अंगदान...

मुंबई के 11 वर्षीय मासूम को इंदौर ने दी नई धड़कन

तीन जिंदगी बचाकर धरमपुरी के परिवार ने पेश की मिसाल

पत्रिका ऑन द स्पॉट

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. जवान बेटे को खोने के दर्द के बीच धरमपुरी के परिवार ने दूसरे का जीवन रोशन करने की भावना से अंगदान का फैसला लिया। बुधवार को शहर में 19 माह के भीतर 19वीं बार कैडेवर ऑर्गन डोनेशन के लिए तीन ग्रीन कॉरिडोर बने। दिल मुंबई के 11 साल के मासूम को ट्रांसप्लांट किया, जबकि लिवर और किडनी शहर में ही तीन मरीजों को प्रत्यारोपित की गई। साथ ही नेत्र व त्वचादान भी हुआ।

धरमपुरी (भार) निवासी सुमित (35) पिता कैलाशचंद्र जैन 3 जून को सड़क हादसे में गंभीर रूप से घायल हो गए थे। बॉम्बे अस्पताल में मंगलवार दोपहर 12.30 बजे ब्रेन डेथ घोषित किया गया। गुरुवार सुबह ग्रीन कॉरिडोर बनाए गए।

बॉम्बे हॉस्पिटल से सुमित के दिल को विदाई देते परिजन।

चार मरीजों को मिला नया जीवन

सुबह 8.10 बजे दिल बॉम्बे अस्पताल से एयरपोर्ट रवाना किया। 18 मिनट में एंबुलेंस एयरपोर्ट पहुंच गई। मुंबई के फोर्टिस हॉस्पिटल में महज 11 साल के मधुसूदन कामत को दिल प्रत्यारोपित किया गया। ठाणे के 48 वर्षीय संजय राणे को बॉम्बे अस्पताल में ही लिवर ट्रांसप्लांट किया गया। सीएचएल अस्पताल में वहीं के कर्मचारी शिवा पंडित को किडनी ट्रांसप्लांट की गई। एक किडनी चोइथराम अस्पताल में ट्रांसप्लांट की गई। एमके इंटरनेशनल आई बैंक को नेत्रदान मिला, वहीं चोइथराम स्थित बैंक में त्वचादान किया गया।

दैनिक भास्कर

इंदौर में 20 माह में 19वीं बार बना ग्रीन कॉरिडोर

हार्ट पहुंचाया मुंबई, इंदौर में हुआ लिवर ट्रांसप्लांट

सड़क हादसे के बाद ब्रेन डेथ 35 वर्षीय युवक की किडनियां भी दान

भास्कर संवाददाता | इंदौर

अंगदान को लेकर इंदौर फिर देशभर के लिए मिसाल बना। 20 माह में 19वीं बार कैडेवर ऑर्गन डोनेशन (ब्रेन डेड मरीज के अंग प्रत्यारोपण) हुआ। धरमपुरी के जैन परिवार ने 35 वर्षीय बेटे के ब्रेन डेथ घोषित होने के बाद बुधवार को अंगदान का फैसला लिया। सुबह तीन ग्रीन कॉरिडोर बनाकर अंगों को जरूरतमंद मरीजों तक पहुंचाया गया। हार्ट मुंबई के फोर्टिस हॉस्पिटल और लिवर इंदौर में ही बॉम्बे हॉस्पिटल में एक मरीज को प्रत्यारोपित किया गया। डॉक्टरों के अनुसार ऑपरेशन सफल रहे। दोनों मरीजों की हालत ठीक है।

शेष | पेज 6 पर

गर्भवती पत्नी ने दी आखिरी विदाई

सुमित का हार्ट अस्पताल से ले जाया जा रहा था, उसी समय वहां मौजूद उसकी गर्भवती पत्नी बिलख पड़ी।

मां बोली- दूसरों को जिंदगी दे गया बेटा

जब अंगों को एम्बुलेंस से भिजवाया जा रहा था, पैरालिसिस से पीड़ित पिता कुछ नहीं कह पाए। मां जरूर बिलखते हुए बेटे को अंतिम विदाई दे रही थी। जब हार्ट को मुंबई भिजवाया जा रहा था, तब मां बोली कि मरने के बाद भी दूसरों को जिंदगी दे गया मेरा बेटा। मुस्कान ग्रुप के सेवाभावी परिवार को सांत्वना देते रहे।

ब्रेनडेथ के बाद युवक के अंगों को ट्रांसप्लांट के लिए रवाना किया गया। पत्नी ने भीगी आंखों से अंगों की पेटी को चूमकर विदा किया।

"अंगदान महादान..."
DONATE
ORGANS
"I WILL DONATE MY ORGANS AND GIVE THESE PEOPLE A NEW LIFE."
"WE GOT A GIFT OF "LIFE" THROUGH ORGAN DONATION."
"THERE'S NOTHING MORE PLEASURABLE IN THIS WORLD THAN GIVING A NEW LIFE TO OTHERS."

Donate Organs = Save Life

Indore Society for Organ Donation

इन्दौर सोसायटी फ़ॉर ऑर्गन डोनेशन

(Society Registration No.03/27/03/16685/14 - PAN AAAA17583D

अधिक जानकारी हेतु निम्न वेब साइट पर लॉगइन करें:

www.organdonationindore.org

E-mail : organdonationindore@gmail.com